कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

भोपाल मंगलवार 23 से 29 अप्रैल 2024 ▸ वर्ष-24 ▸ अंक-48 ▸ पृष्ठ-16 ▸ मूल्य-13 रु. ▸ RNI No. MP HIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2024-26

अंदर के पृष्ठों में

5 ● मूंग उत्पादन की तकनीक

6 ● ग्रीष्म ऋतु में खेत का ध्यान

7 ● भिंडी फसल की कृषि तकनीक

11 ● हरी पत्तेदार सब्जियों ....

चीनी उत्पादन घटकर 3.10 करोड़ टन पर

नई दिल्ली। चालू 2023-24 में चीनी उत्पादन घटकर 3 करोड़ 10.9 लाख टन रह गया है। उद्योग निकाय इस्मा के जारी आंकड़ों के अनुसार यह गिरावट कर्नाटक में कम उत्पादन की वजह से है। वर्ष 2022-23 की समान अवधि में चीनी का उत्पादन 3 करोड़ 12.3 लाख टन रहा था। भारत दुनिया का एक प्रमुख चीनी उत्पादक देश है।

पीएटी परीक्षा में देरी

छः माह पीछे चल रही कृषि छात्रों की पढ़ाई

(मुख्य संवाददाता)

भोपाल। सरकार खेती को लाभकारी बनाना चाहती है किन्तु खेती की उन्नत तकनीक बताने वाले कृषि छात्रों की शिक्षा के प्रति सरकार बेहद लापरवाह प्रतीत होती है। जिस प्रि-एग्रीकल्चर टेस्ट (पीएटी) के माध्यम से मध्यप्रदेश में कृषि शिक्षा (स्नातक) के लिये छात्रों का चयन किया जाता है वही पीएटी पिछले पांच साल से छः माह पीछे चल रही है। कोरोना संक्रमण 2019-20 के पहले पीएटी परीक्षा हर साल अप्रैल-मई में आयोजित की जाती थी जिसका परिणाम जून में घोषित करके जुलाई-अगस्त से कक्षायें शुरू हो जाती थी। पिछले पांच साल से अब पीएटी की परीक्षा जुलाई-अगस्त के दरम्यान हो रही है जिससे परिणाम आने एवं एडमिशन प्रक्रिया में चार माह से अधिक समय लग रहा है। पांच वर्षों का रिकार्ड देखें तो पता चलता है कि दिसंबर-जनवरी के पहले स्नातक कृषि छात्रों की पढ़ाई शुरू ही नहीं हो पा रही है। इस दृष्टि से एग्रीकल्चर विषय से पढ़ने वाले छात्र एक सेमेस्टर यानि छः माह पीछे चल रहे हैं। बी.एस.सी. कृषि एवं उद्यानिकी स्नातक छात्रों की पढ़ाई छः माह पीछे होने से कृषि विषय से एम.एस.सी. एवं पी.एच.डी. करने वाले छात्र भी 6 से 8 माह पीछे चल रहे हैं। पीएटी की परीक्षा में देरी से युवाओं का रूझान कृषि शिक्षा के प्रति लगातार कम हो रहा है। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2016 में पीएटी परीक्षा में 58 हजार छात्र बैठे थे वहीं पिछले साल वर्ष 2023 में मात्र 17 हजार छात्रों ने परीक्षा दी। पिछले नौ वर्षों में पीएटी देने वाले छात्रों की संख्या बढ़ने के बजाय लगातार घट रही है, यह चिंतनीय है। जबकि मेडिकल के लिये नीट जैसी परीक्षा के लिये छात्रों की संख्या दोगुनी अधिक हुई है। वर्तमान में प्रदेश में दो कृषि विश्वविद्यालय जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर एवं राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर के अंतर्गत 17 कृषि महाविद्यालय हैं। इन कृषि महाविद्यालयों में स्नातक छात्रों की सीटें 1100 हैं। इन सीटों के लिये हर वर्ष पीएटी के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। परीक्षा का आयोजन कर्मचारी चयन मंडल द्वारा किया जाता है।

इस साल जून में हो सकती है पीएटी

इस साल जून महीने में पीएटी परीक्षा आयोजित होने की संभावना है। प्रदेश के दोनों कृषि विश्वविद्यालयों ने इस संबंध में राज्य शासन को पीएटी जून में कराने संबंधी पत्र लिखा है। कर्मचारी चयन मंडल ने पीएटी जून में करवाने की तैयारी शुरू कर दी है। हालांकि अभी तक तारीख घोषित नहीं की है। पिछले साल 12 जुलाई को पीएटी का आयोजन हुआ था जिसमें 17 हजार छात्र परीक्षा में शामिल हुये थे। वर्ष 2023 में पीएटी का रिजल्ट अक्टूबर में आया था और एडमिशन जनवरी में हुआ था। इस वर्ष यदि पीएटी जून में होती है तो करीब 35 से 40 हजार छात्र परीक्षा दे सकते हैं।

कृषि शिक्षा से दूरी बनाते युवा

कम समय मिलने से पूरा नहीं हो रहा कोर्स

पिछले साल कई कृषि महाविद्यालयों में छः माह के स्थान पर तीन माह में ही परीक्षा प्रथम सेमेस्टर की करा दी गई जिससे छात्रों का पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो सका।

कृषि विश्वविद्यालय का कहना है कि यदि पीएटी जून में हो जाय और परिणाम जुलाई तक आ जाय तो एग्रीकल्चर यूजी की कक्षायें सितंबर से शुरू की जा सकती हैं। इसके लिये प्रति सेमेस्टर छात्रों का छः माह का समय मिल जायेगा।

यूजी की कक्षायें समय से शुरू होने से स्नातकोत्तर एवं पीएचडी का शेड्यूल भी समय पर आ जायेगा जो कि छः से आठ माह पीछे चल रहा है।

शासन के जिम्मेदार पूरी तरह अनभिज्ञ

कृषि मंत्रालय, मध्यप्रदेश के सभी जिम्मेदार अधिकारियों को यह पता है लेकिन कोई भी कार्यवाही करने को तैयार नहीं। कृषि विश्वविद्यालय इस संबंध में बार-बार पत्र लिखते हैं फिर भी कोई सक्रियता नहीं दिखती। राज्य सरकार कृषि शिक्षा के प्रति कभी भी संवेदनशील नहीं रही। राजनीतिक विवशता के चलते धड़ाधड़ कृषि कालेज खोले जा रहे हैं लेकिन पढ़ाने वाले प्राध्यापक ढूंढ़ने से भी नहीं मिल रहे। वर्ष 2026 तक प्रदेश के 60 फीसदी प्राध्यापक सेवानिवृत्त होने वाले हैं। अभी भी प्राध्यापकों का 40 फीसदी पद रिक्त है। मध्यप्रदेश की कृषि शिक्षा भगवान भरोसे चल रही है।

इस वर्ष 100 लाख टन गेहूं खरीदेगी सरकार

भोपाल। लोकसभा चुनाव की सरगर्मी के बीच म.प्र. में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर विपणन वर्ष 2024-25 के लिए गेहूं की खरीदी तेजी से चल रही है। इस वर्ष लगभग 100 लाख मी. टन गेहूं खरीदी का लक्ष्य रखा गया है।

15 अप्रैल तक लगभग 21 लाख 66 हजार टन से अधिक गेहूं की खरीदी की जा चुकी है। इसके एवज में 2 लाख 63 हजार से अधिक किसानों को लगभग 3355 करोड़ रुपए का भुगतान हो गया है।

यदि एमएसपी पर सुचारू रूप से खरीदी होती रही तो इस वर्ष लगभग 100 लाख टन गेहूं की खरीदी पर किसानों को लगभग 24 हजार करोड़ से अधिक राशि का भुगतान होने की उम्मीद है। क्योंकि एमएसपी 2275 रु. प्रति क्विंटल पर मोहन यादव सरकार ने 125 रुपए प्रति क्विंटल बोनस की भी घोषणा की है जिससे गेहूं का एमएसपी मूल्य 2400 रुपए क्विंटल हो गया है।

म.प्र. में दूसरे अग्रिम उत्पादन अनुमान के मुताबिक वर्ष 2023-24 में लगभग 329 लाख टन से अधिक गेहूं उत्पादन होने का अनुमान लगाया गया है। इसमें से विपणन वर्ष 2024-25 में लगभग 100 लाख टन गेहूं खरीदने का लक्ष्य केन्द्र सरकार ने म.प्र. को दिया है। जबकि देश में कुल 320 लाख टन गेहूं की खरीदी एमएसपी पर की जाएगी। प्रदेश में 15 लाख से अधिक किसानों ने गेहूं विक्रय के लिए पंजीयन कराया है।

मप्र सांख्यिकी विभाग के अनुसार वर्ष 2022-23 में 5 लाख 90 हजार किसानों से 46 लाख मी. टन गेहूं खरीदा गया था और किसानों को 9271 करोड़ रुपए का भुगतान हुआ था। इसी प्रकार वर्ष 2021-22 में 128.5 लाख टन खरीदी के बदले 25 हजार 301 करोड़ का भुगतान तथा वर्ष 2020-21 में 129.42 लाख टन के विरुद्ध 24 हजार 806 करोड़ का भुगतान किया गया था।

एमएसपी पर पर बोनस

सरकार की ओर से किसानों को गेहूं की खरीद पर बोनस का भुगतान करने के लिए प्रदेश सरकार पर 3850 करोड़ रुपए का वित्तीय भार आएगा।

विपणन सीजन 2023-24 में गेहूं का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2125 रुपए प्रति क्विंटल था जिसे केंद्र सरकार ने इस रबी विपणन सीजन 2024-25 के लिए 2275 रुपए कर दिया है। ऐसे में किसानों को पिछले साल के मुकाबले इस साल गेहूं बेचने से 150 रुपए अधिक मिलेंगे। वहीं राज्य सरकार की ओर से 125 रुपए का बोनस भी मिलेगा। ऐसे में मध्यप्रदेश के किसानों को इस बार गेहूं बेचने से प्रति क्विंटल 275 रुपए पिछले साल के मुकाबले अधिक मिलेंगे।

किसानों को राहत

गेहूं खरीदी के लिए नोडल विभाग खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग है जिसने प्रदेश में लगभग 3642 खरीदी केन्द्र बनाए हैं। ज्ञातव्य है प्रदेश में बेमौसम बरसात तथा ओलावृष्टि के कारण कुछ क्षेत्रों में गेहूं फसल प्रभावित हुई है, दाना भी चमकविहीन हो गया है। लस्टर लैस दाने को भी खरीदने के निर्देश केन्द्र एवं राज्य सरकार ने दिए हैं।

लोकसभा चुनाव के प्रथम चरण का मतदान सम्पन्न

नई दिल्ली। आम चुनाव 2024 के पहले चरण के मतदान में भीषण गर्मी के बावजूद भारी मतदान दर्ज किया गया। मतदान काफी हद तक शांतिपूर्ण रहा और विभिन्न क्षेत्रों के मतदाताओं ने नागरिक जिम्मेदारी व गौरव का शानदार प्रदर्शन करते हुए उत्साहपूर्वक भाग लिया। आम चुनाव 2024 के पहले चरण में, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश की राज्य विधानसभाओं के लिए मतदान के साथ-साथ 18वीं लोकसभा के चुनाव के लिए 10 राज्यों/केंद्र-शासित प्रदेशों में मतदान पूरा हो गया है। आयोग ने पहले चरण के मतदाताओं और पूरी चुनाव मशीनरी को धन्यवाद दिया।

शाम 7 बजे तक 21 राज्यों/ केंद्र-शासित प्रदेशों में मतदान का संभावित आंकड़ा 60 प्रतिशत से अधिक बताया गया है। राज्यवार आंकड़े अनुलग्नक-ए में दिए गए हैं। सभी मतदान केंद्रों से रिपोर्ट प्राप्त होने पर मतदान प्रतिशत बढ़ने की संभावना है, क्योंकि कई निर्वाचन क्षेत्रों में शाम 6 बजे तक मतदान निर्धारित है। साथ ही, मतदान का समय समाप्त होने तक मतदान केंद्रों पर पहुंचने वाले मतदाताओं को अपना वोट डालने की अनुमति दी जाती है।

फसल बर्बाद करने वाले कीटों को मार देगा मित्र किट

कृषि विज्ञान केद्र में ट्राइकोग्रामा कीट का सफल प्रयोग

नर्मदापुरम। हरियाणा और उत्तरप्रदेश की तरह अब प्रदेश के किसान भी सब्जी व कई फसलों को शत्रु कीटों से बचाने के लिए मित्र कीटों की मदद ले सकेंगे।

मित्र कीट बनाने का प्रयोग नर्मदापुरम के कृषि विज्ञान केंद्र के बॉयो कंट्रोल लैब में किया गया है। एक साल से सब्जी व फसलों पर इसका प्रयोग सफल रहा। लैब में इसे चावल के कीट कोर्सेरा सिफ्लोनिका के अंडों पर पाला जा रहा है। कोर्सेरा के अंडों की महीन सतह छह बाय दो इंच के कार्ड पर चिपकाकर बनाई जाती है। एक कार्ड पर 20 हजार अंडे होते हैं। यही कार्ड फसल के ऊपर लगाते हैं। इससे मित्र कीट निकलकर शत्रु कीट के अंडे नष्ट करते हैं।

खासियत

- ट्राइकोग्रामा प्रजाति बहुत ही सूक्ष्म (लंबाई 1 मिमी) अंडा परजीवी कीट है।
- यह कई तरह के लेपिडोप्टेरागण के कीटों के अंडों को शिकार बनाकर नष्ट करता है।
- दुनिया में ट्राइकोग्रामा (मित्र कीट) की 200 प्रजातियां पाई जाती हैं।

ऐसे करता है काम

अंडे परजीवी ट्राइकोग्रामा को प्रयोगशाला में बहुगुणन करने के बाद खेतों में छोड़ा जाता है। यह शत्रु कीट के अंडों में अंडा देकर उन्हें उसी अवस्था में नष्ट करता है। फिर शत्रु कीट के अंडे से मित्र कीट का वयस्क कीट बाहर आता है। यह फिर से शत्रु कीट में अंडा देता है। इनका जीवन चक्र बहुत छोटा होता है। एक फसल अवधि में इसकी कई पीढ़ियां पूरी हो जाती हैं।

नरवाई जलाना पर्यावरण के लिये नुकसानदायक

खण्डवा। उप संचालक कृषि के.सी. वास्केल ने किसान भाईयों से कहा है कि नरवाई में आग लगाना कृषि के लिये नुकसानदायक होने के साथ ही पर्यावरण की दृष्टि से भी हानिकारक है। इसके कारण विगत वर्षों में गंभीर स्वरूप की अग्नि दुर्घटनाएं घटित हुई हैं तथा व्यापक संपत्ति की हानि हुई है। ग्रीष्म ऋतु में बढ़ते जल संकट में इससे बढ़ोत्तरी तो होती ही है, साथ ही कानून व्यवस्था के लिये विपरीत परिस्थितियां निर्मित होती है। नरवाई जलाने से खेत की आग के अनियंत्रित होने पर जन, धन, संपत्ति, प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव जंतु आदि नष्ट हो जाते हैं, जिससे व्यापक नुकसान होता है। खेत की मिट्टी में प्राकृतिक रूप से पाये जाने वाले लाभकारी सूक्ष्म जीवाणु इससे नष्ट होते हैं। जिससे खेत की उर्वरा शक्ति शनैः शनैः घट रही है और उत्पादन प्रभावित हो रहा है। खेत में पड़ा कचरा, भूसा, डंठल सड़ने के बाद भूमि को प्राकृतिक रूप से उपजाऊ बनाते हैं, जिन्हें जलाकर नष्ट करना ऊर्जा को नष्ट करना है। आग लगाने से हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है, जिससे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

विदिशा विनोवर फैक्ट्री
139-दुर्गा चौक तलैया, विदिशा (म.प्र.) फोन : 07592-232665 मो. : 9827215862
निर्माता - उड़ावनी मशीन, विदिशा ग्रेन (ग्रेडिंग मशीन), सुरक्षा रोलिंग शटर, ट्राली, कल्टीवेटर, ट्रैक्टर चलित पंप एवं अल्टिनेटर हाइड्रा डोजर, बोनी मशीन बैल चलित एवं अन्य कृषि उपकरण।

E-mail : vidisha.factory@gmail.com Web.: facebook.com/vidishavinoberfactory

पीएम मोदी के अगले कार्यकाल में खेती में सुधार की उम्मीद

उर्वरकों की सब्सिडी पर समुचित ढंग से निगरानी होगी

सब्सिडी के अनुचित इस्तेमाल की खामियों को किया जाएगा दूर

नई दिल्ली। कृषि अधिनियम वापस लिए जाने के बाद सरकार संभवत: कृषि क्षेत्र की लागत की निगरानी के क्षेत्र में सुधार करेगी। इसमें मुख्य तौर पर बीज, रसायन और संयंत्र उर्वरक क्षेत्रों से जुड़े विनियमन और कानून होंगे। सूत्रों के मुताबिक इसका खाका तैयार हो गया है। इस खाके का ध्येय भारत के किसानों की जीवन को आसान बनाने के लिए गुणवत्ता से समझौता किए बिना त्वरित मंजूरियां देना है। यह मोदी के 3.0 (तीसरे कार्यकाल) के 100 दिन के एजेंडे का हिस्सा हो सकती है।

उर्वरकों की सब्सिडी पर समुचित ढंग से निगरानी होगी। सब्सिडी के अनुचित इस्तेमाल की खामियों और कमियों को दूर किया जाएगा। इस क्रम में उर्वरकों के मामलों में नीम लेपित यूरिया की सफलता पर विचार किया जाएगा। कुछ साल पहले यह विचार पेश किया गया था कि देश के चुनिंदा जिलों में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के बेहतर वर्जन लाया जाए। इस क्रम में जमीन का मालिकाना हक रखने वालों और पोषक तत्वों की खपत में कुछ संबंध स्थापित किया गया था। अभी प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के तहत पाइंट ऑफ सेल (पीओएस) डिवाइस से उर्वरक खरीदने वाले किसानों को आधार प्रमाणन की

प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इससे उर्वरक की बोरी खरीदने वाले व्यक्ति की पहचान सुनिश्चित हो पाती है।

हालांकि किसानों के कितने भी बोरी उर्वरक खरीदने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। इससे उर्वरक के बेजा इस्तेमाल और अनुचित प्रयोग की आशंका रहती है। सूत्रों के मुताबिक बीज और संयंत्र की खाद के मामले में देश में विनियमन और मंजूरी प्रक्रिया को कई स्तरों से लेने के कारण अधिक समय लगता है और इसलिए इस क्षेत्र में कई सुधार तत्काल किए जाने की जरूरत है। सूत्रों के मुताबिक सरकार एग्रो केमिकल क्षेत्र के लिए अनुकूल नीति का वातावरण बना सकती है। इस क्रम में एग्रो केमिकल्स निर्यात को बढ़ावा दिया जाएगा। विदेशी निवेश के लिए भारत को आकर्षक स्थान बनाया जाएगा। इस उद्योग में कार्यरत छोटे व क्षेत्रीय कंपनियों के हितों की रक्षा होगी। अभी भारत में नई एग्रो केमिकल्स मोलेक्यूल के पंजीकरण की हालिया प्रक्रिया में आमतौर पर अधिक समय लेती है। यह महंगी और जटिल भी है। लिहाजा चुनिंदा बहुराष्ट्रीय कंपनियां और नामचीन घरेलू कंपनियां ही नए मोलेक्यूल को विकसित करने के लिए शोध व विकास कर सकती हैं और वे इसके निर्माण व बिक्री के लिए पंजीकरण हासिल कर सकती हैं। इस जटिल प्रक्रिया के कारण भारत में केवल 280 मोलेक्यूल और 800 फॉर्मूले (कांबिनेशन सहित) ही पंजीकृत हैं। भारत की तुलना में यूरोपियन यूनियन में यह संख्या दोगुनी है जबकि जापान में तीन गुनी है।

उद्योग यह चाहता है कि केंद्रीय कीटनाशक प्रयोगशाला (सीआईएल) और नए आवेदनों की मंजूरी के समय और लंबित सूची को कम करने के मामले में सुधार किए जाएं। भारत के कृषि निर्यातकों को कीटनाशकों के अधिशेष से जुड़े मामलों में प्रमुख तौर पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैसे इस मामले में ईयू के नियम। 'अधिकतम अवशेष सीमा (एमआरएल) कड़े मानदंडों का पालन करने के लिए प्रमुख आयातकों द्वारा सुरक्षित समझे जाने वाले मोलेक्यूल को पंजीकृत करना नीतिगत बदलाव है। इससे दीर्घावधि में कृषि निर्यात को बढ़ावा मिल सकता है।' बीजों के मामले में नकली बीज समस्या है। नकली बीज पर निगरानी रखने के लिए समुचित निगरानी किए जाने की जरूरत है।

बासमती चावल ने तोड़ा निर्यात का रिकॉर्ड, और बढ़ सकता है एक्सपोर्ट

नई दिल्ली। वित्त वर्ष 2024 में बासमती चावल के निर्यात ने मात्रा और मूल्य दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि हासिल की है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल से फरवरी तक शिपमेंट 5.2 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया है और निर्यात मात्रा 4.67 मिलियन टन से अधिक है जो एक नया रिकॉर्ड है।

जबकि मार्च के आंकड़ों को शामिल करने के बाद पूरे वित्तीय वर्ष के लिए निर्यात एक नया रिकॉर्ड स्थापित करने का अनुमान है द्य मिडिल ईस्ट में चल रही भूराजनीतिक तनाव के कारण चिंताएं पैदा होती हैं, जो 70 प्रतिशत से अधिक बासमती निर्यात के लिए एक प्रमुख बाजार है। व्यापारिक सूत्रों से संकेत मिलता है कि क्षेत्र में ईरान और इज़राइल के बीच हालिया संघर्ष नए वित्तीय वर्ष में भारतीय निर्यातकों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पैदा कर सकता है। स्थिति पर बारीकी से नजर रखी जा रही है, क्योंकि बासमती चावल के निर्यात पर इसका संभावित प्रभाव अनिश्चित बना हुआ है। लाल सागर क्षेत्र में हाल के हमलों के परिणामस्वरूप भारतीय निर्यातकों को पहले से ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, जिससे यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे गंतव्यों के लिए शिपिंग लागत और पारगमन समय में वृद्धि हुई है। ईरान और इराक जैसे देशों के पास वर्तमान में किसी भी भूराजनीतिक नतीजों से निपटने के लिए पर्याप्त स्टॉक है, जबकि सऊदी अरब, ओमान, कतर और संयुक्त अरब अमीरात जैसे अन्य खाड़ी देशों को कमी का सामना करना पड़ सकता है। इससे बासमती चावल के निर्यात ऑर्डर में संभावित रूप से नई वृद्धि हो सकती है, साथ ही अतिरिक्त मांग और जोखिम प्रीमियम के कारण कीमतें भी बढ़ सकती हैं। अप्रैल से फरवरी की अवधि के दौरान, बासमती शिपमेंट के मूल्य में 22 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। सबसे बड़े खरीदार सऊदी अरब ने .1.1 बिलियन से अधिक मूल्य का बासमती चावल आयात किया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह 920 मिलियन था। मात्रा के संदर्भ में, सऊदी अरब को निर्यात 9.61 लाख टन तक पहुंच गया, जो पहले 8.51 लाख टन था। पिछले वर्ष की तुलना में मात्रा और मूल्य दोनों दोगुने से अधिक के साथ इराक दूसरे सबसे बड़े खरीदार के रूप में उभरा। अप्रैल से फरवरी के दौरान भारत से इराक का बासमती चावल आयात 7.02 लाख टन रहा, जो पिछले साल 3.13 लाख टन था। इराक में बासमती शिपमेंट का मूल्य 757 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह 321 मिलियन डॉलर था।

ईरान, जो पहले दूसरा सबसे बड़ा खरीदार था, अब तीसरे स्थान पर है, अप्रैल से फरवरी के दौरान शिपमेंट का मूल्य घटकर 6.44 लाख टन हो गया है, जो पिछले वर्ष 9.27 लाख टन था। अप्रैल से फरवरी के दौरान ईरान को बासमती का निर्यात 652.70 मिलियन डॉलर का हुआ, जो पिछले साल की समान अवधि के दौरान 911.02 मिलियन डॉलर से कम है।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

निराशा का गहरा धक्का मस्तिष्क को वैसा ही शून्य बना देता है, जैसे लकवा शरीर को। – ग्रेविल

सामान्य मानसून की भविष्यवाणी

इस साल के लिये निजी क्षेत्र की मौसम एजेंसी स्काईमेट ने देश में सामान्य मानसून की भविष्यवाणी की है। स्काईमेट ने देश भर के लिये क्षेत्रवार मौसम अनुमान बताया है। एजेंसी के अनुसार जून महीने में देश के उत्तरी एवं मध्यभाग में सामान्य बारिश होगी जबकि पूर्वोत्तर में कम बारिश की आशंका है। जुलाई एवं अगस्त के महीनों में बारिश ब्रेक ले सकती है जबकि सितंबर में अच्छी बारिश की संभावना बतायी गई है। भारतीय मौसम विभाग अप्रैल माह में पहला मौसम पूर्वानुमान बतायेगा जिससे पता चलेगा कि इस साल का मानसून कैसा रहेगा। मानसून का बेहतर होना देश के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भारत में 80 प्रतिशत खेती वर्षा आश्रित है। इसके अलावा मानसून के ऊपर सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था आश्रित है। जब भी मानसूनी बारिश में उतार-चढ़ाव आया है भारतीय अर्थव्यवस्था लड़खड़ायी है। मानसूनी बारिश कृषि के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अच्छी बारिश से खरीफ फसलें जैसे धान, मक्का, कपास, अरहर इत्यादि का उत्पादन तो बढ़ता ही है साथ ही जमीन के अंदर का जल स्तर बढ़ने से रबी फसलों के बेहतर उत्पादन की संभावना बढ़ जाती है। नदी, नाले, तालाब एवं कुओं में जलस्तर बढ़ने से निश्चित रूप से भविष्य के पानी का पुख्ता इंतजाम हो सकता है। पिछले दस वर्षों की बारिश पर नजर डालें तो पता चलता है कि दिनों-दिन औसत मानसूनी बारिश कम हो रही है। इसलिये पानी की एक-एक बूंद सहेजने की जरूरत है। मानसूनी बारिश को व्यर्थ नहीं होने देना चाहिये। तालाब, कुएं, नदी-नालों पर स्टाप डेम एवं खेतों में मेड़ बंधान करके वर्षा जल को रोकने की जरूरत है। वृक्षारोपण के माध्यम से अधिक से अधिक जल संरक्षण किया जा सकता है। छोटे-छोटे स्टाप डेम एवं नदी-नालों पर बोरी बंधान जैसे कार्य जल संरक्षण में कारगर भूमिका निभा सकते हैं। पानी का सबसे अधिक 75 प्रतिशत उपयोग कृषि में सिंचाई के लिये होता है। सिंचाई की उन्नत तकनीकों को अपनाकर पानी को बचाया जा सकता है। बहाव पद्धति से सिंचाई के स्थान पर उन्नत तकनीक जैसे स्प्रिंकलर एवं ड्रिप सिंचाई पद्धति से अधिक से अधिक जल बचाया जा सकता है। धान की खेती में श्री पद्धति कारगर साबित हुई है। इस पद्धति में धान की सामान्य पद्धति से 50 प्रतिशत कम पानी की जरूरत होती है। इसके साथ ही कम पानी वाली किस्में अपनाकर पानी की बचत की जा सकती है। मानसूनी बारिश हमारे लिये उतनी ही जरूरी है जितना जीवन के लिये आक्सीजन (हवा)। इसलिये मानसूनी बारिश का सदुपयोग हम सबकी नैतिक जिम्मेवारी है। भारत विविधता से सम्पूर्ण देश है। हर राज्य की अपनी संस्कृति एवं अनेकता में एकता की अटूट मिसाल है। बारिश हमारे लिये किसी मोती से कम नहीं है। उत्तर से दक्षिण एवं पूरब से पश्चिम सभी के लिये मानसूनी बारिश महत्वपूर्ण है। मध्यप्रदेश देश के मध्य में स्थित होने के नाते दक्षिण-पश्चिम मानसून का हमेशा लाभ मिला है। इस साल भी यही उम्मीद है कि मध्यप्रदेश के सभी जिलों में मानसूनी बारिश अच्छी होगी।

मृदा स्वास्थ्य से प्रभावित होता मानव स्वास्थ्य

● माधव पटेल, दमोह (म.प्र.)

देश की आर्थिक समृद्धि में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है कृषि की क्योंकि देश की बहुसंख्यक आबादी कृषि पर ही निर्भर करती है एवं कृषि के अच्छे उत्पादन के लिए आवश्यक है कि खेतों की मिट्टी का स्वास्थ्य अच्छा बना रहे। वास्तव में मिट्टी आर्थिक और सामाजिक विकास में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

यह मानव जीवन के लिए आवश्यक अनाज, वानस्पतिक, रेशा और पशुओं के लिए चारा रेशा प्रदान करती है। इसलिए समय-समय पर इसकी देखभाल की जरूरत होती है। खेती लायक जमीन को बढ़ाना मुश्किल है,इसलिए मौजूदा कृषि क्षेत्र पर ही उत्पादन का दबाव है। ज्यादा अनाज उगाने की हमारी कोशिश में मिट्टी का इस हद तक दुरुपयोग हुआ है कि अब यह हमारी सेहत को प्रभावित करने लगा है। मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट विभिन्न भौतिक, रासायनिक और जैविक प्रक्रियाओं का नतीजा है। बिना जमीन खाली छोड़े निरंतर फसलों को लेना भी एक कारण है। मिट्टी की गुणवत्ता में लगातार गिरावट को अक्सर उपज की स्थिरता या कमी के एक कारण के रूप में देखा जाता है। 2016 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की एक रिपोर्ट ने स्पष्ट किया था कि 12.07 करोड़ हेक्टेयर जमीन जो लगभग हमारी भूमि का 36.7 फीसदी है वह अनेकों प्रकार के ह्रास का शिकार है। इतनी अधिक मात्रा में भूमि का ही रास्ते प्रभावित होना निश्चित रूप से हमारे उत्पादन को प्रभावित कर रहा है। बात केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है। अनेक स्त्रोत स्पष्ट करते हैं की भूमि की गुणवत्ता में गिरावट होने के कारण उसे उत्पादित होने वाले अनाज के पोषक तत्वों में भी संतुलन उत्पन्न हो गया है। विभिन्न प्रकार के रसायनों के प्रयोग से मिट्टी लगातार प्रदूषित हो रही है। इन रसायनों के कारण मिट्टी में विषाक्तता और पोषक व जैविक तत्वों में गिरावट आ रही है। इस प्रकार मिट्टी में उत्पादित होने वाले अनाज से मानव स्वास्थ्य लगातार प्रभावित हो रहा है और मानव में अनेक बीमारियां जन्म ले रही हैं। निश्चित रूप से मिट्टी का उपजाऊपन घटना वैश्विक चिंता है। दुनिया की एक तिहाई मिट्टी पहले ही कमजोर हो चुकी है और एक आकलन के मुताबिक यदि यही गतिविधियां संपादित होती रहे तो 2050 तक हम कृषि भूमि का 90 प्रतिशत भाग गुणवत्ता रहित कर देंगे। मृदा की गुणवत्ता में ह्रास होने से आर्गेनिक कार्बन की अत्यधिक कमी हो रही है। जरूरी तत्वों का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा ही इस्तेमाल हो रहा है। 40 प्रतिशत तत्व जमीन में बेकार पड़े रह जाते हैं। अत्याधिक यूरिया की वजह से पत्तियां मीठी हो रही हैं, जिससे कीटों का हमला बढ़ा है।

मृदा स्वास्थ्य प्रभावित होने से न केवल फसलें बल्कि सब्जियों की गुणवत्ता भी निरंतर प्रभावित हो रही है। अनेक सर्वे रिपोर्ट्स का निष्कर्ष है कि गोभी में सूखापन आ गया है। धनिया की सुगंध प्रभावित हुई है। टमाटर के खट्टेपन में भी कमी आई है। यहां तक की तोरई और लौकी जैसी सब्जियों का स्वाद भी पहले की तरह नहीं रहा। आलू में स्टार्च की मात्रा कम हो गई है। इस दिशा में सभी संस्थान अपने कार्यों का निर्वहन कर रहे हैं परंतु सबसे महत्वपूर्ण विषय है कि हमें किसानों में मिट्टी के स्वास्थ्य परीक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करनी होगी क्योंकि मिट्टी स्वास्थ्य को तो किसान कुछ मानते ही नहीं है और बिना किसी से पूछे परंपरागत तरीके से किसी भी उर्वरक का लगातार छिड़काव करते रहते हैं। भले ही उन पोषक तत्वों की कमी उनकी जमीन में हो या ना हो साथ ही साथ मृदा स्वास्थ्य कार्ड को और अधिक सक्रिय करते हुए उसके महत्व के बारे में किसानों को जागरूक करना होगा। मिट्टी की सेहत में सुधार भविष्य में सुरक्षित खाद्यान्न आपूर्ति, पानी पर दबाव घटाने और जलवायु परिवर्तन को बेअसर करने में मदद करते हुए इस टकराव को टालने में बहुत अधिक सहायक होगा। तीनों व्यापक जैव मंडल- मिट्टी, समुद्र और वायुमंडल में अकेली मिट्टी है, जिसमें हमारे पास मौजूदा उपलब्ध तकनीकी की मदद से सुधार करने के लिए समय और अवसर है।

गेहूं एवं चना भूसा का उपयोग ईंट भट्टे में जलाने पर प्रतिबंध

खण्डवा। खण्डवा जिला अंतर्गत चारा, भूसा के निर्यात होने से पशुओं के लिए भूसे एवं चारे की कमी होने की आशंका है। जिले में उत्पादित भूसे एवं चारे को पशुओं हेतु पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति एवं उनका संग्रहण करना आवश्यक है। इसलिये कलेक्टर अनूप कुमार सिंह ने मध्यप्रदेश पशु चारा (निर्यात नियंत्रण) आदेश 2000 के विहित प्रावधानों के अधीन प्राप्त शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए पशुओं के आहार में आने वाले गेहूं एवं चना भूसा का उपयोग ईंट भट्टे तथा फैक्ट्रियों में जलाने एवं जिले की सीमा के बाहर निर्यात को तत्काल प्रभाव से 15 जून 2024 तक के लिये प्रतिबंधित किया है।

जारी आदेश अनुसार गेहूं तथा चने के भूसे को कोई कृषक, व्यापारी, व्यक्ति या निर्यातक संस्था किसी भी प्रकार के वाहन, नाव, मोटर-ट्रक, बैलगाड़ी एवं अन्य साधनों द्वारा जिले के बाहर बिना संबंधित अनुविभागीय दण्डाधिकारी की लिखित अनुज्ञा के निर्यात नहीं करेंगे। आदेश का उल्लंघन होने पर मध्यप्रदेश पशु चारा (निर्यात नियंत्रण) आदेश 2000 एवं धारा 188 भा.द.वि. 1860 के प्रावधानों के अनुसार दंडात्मक कार्यवाही की जायेगी।

अनमोल वचन

विजय ध्येय की प्राप्ति में नहीं, वरन् उसको पाने के लिए निरंतर प्रयास में है। – महात्मा गांधी

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

चैत्र शुक्ल/बैशाख कृष्ण पक्ष विक्रम संवत 2081 ईस्वी सन् 2024

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
23 अप्रैल 24	मंगलवार	चैत्र शुक्ल- 15	पूर्णिमा
24 अप्रैल 24	बुधवार	बैशाख कृष्ण-01	
25 अप्रैल 24	गुरुवार	बैशाख कृष्ण-02	
26 अप्रैल 24	शुक्रवार	बैशाख कृष्ण-02	
27 अप्रैल 24	शनिवार	बैशाख कृष्ण-03	
28 अप्रैल 24	रविवार	बैशाख कृष्ण-04/05	
29 अप्रैल 24	सोमवार	बैशाख कृष्ण-06	
30 अप्रैल 24	मंगलवार	बैशाख कृष्ण-07	
01 मई 24	बुधवार	बैशाख कृष्ण-08	
02 मई 24	गुरुवार	बैशाख कृष्ण-09	पंचक 11.42 दिन से
03 मई 24	शुक्रवार	बैशाख कृष्ण-10	पंचक
04 मई 24	शनिवार	बैशाख कृष्ण-11	एकादशी, पंचक
05 मई 24	रविवार	बैशाख कृष्ण-12	प्रदोष व्रत, पंचक
06 मई 24	सोमवार	बैशाख कृष्ण-13	पंचक 4.31 शाम तक

मूंग उत्पादन की उन्नत तकनीक

- **डॉ. रविंद्र सिंह सोलंकी**
  राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
- **डॉ. जितेंद्र पाटीदार**
  शुष्क क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र (आईसीएआरडीए)
- **सतीश कुमार**
  स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर, आईटीएम यूनिवर्सिटी, ग्वालियर (म.प्र.)

मध्यप्रदेश में मूंग ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो मौसम की कम समय में पकने वाली एक मुख्य दलहनी फसल है। इसके दाने का प्रयोग मुख्य रूप से दाल के लिये किया जाता है जिसमें 24-26 प्रतिशत प्रोटीन, 55-60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट एवं 1.3 प्रतिशत वसा होता है।

दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ों में गठानें पाई जाती हैं जो कि वायुमण्डलीय नत्रजन का मृदा में स्थिरीकरण (38-40 कि.ग्रा. नत्रजन/हे.) एवं फसल की खेत से कटाई उपरांत जड़ों एवं पत्तियों के रूप में प्रति हेक्टेयर 1.5 टन जैविक पदार्थ भूमि में छोड़ा जाता है जिससे भूमि में जैविक कार्बन का अनुरक्षण होता है एवं मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाती है। मध्यप्रदेश में मूंग की फसल हरदा, होशंगाबाद, जवलपुर, ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, श्योपुर एवं शिवपुरी जिले में अधिक मात्रा में उगायी जाती है। मध्यप्रदेश की औसत उत्पादकता लगभग 350 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर है जो कि बहुत कम है, जिसके बढ़ने की प्रबल सम्भावनायें हैं। अत: कृषक भाई उन्नत प्रजातियों एवं उत्पादन की उन्नत तकनीक को अपनाकर पैदावार को 8-10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त कर सकते हैं।

जलवायु : मूंग के लिए नम एवं गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है। इसकी खेती वर्षा ऋतु में की जा सकती है। इसकी वृद्धि एवं विकास के लिए 25-32 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान अनुकूल पाया गया हैं। मूंग के लिए 75-90 से.मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त पाये गये हैं। पकने के समय साफ मौसम तथा 60 प्रतिशत आर्दता होना चाहिये। पकाव के समय अधिक वर्षा हानिप्रद होती है।

भूमि: मूंग की खेती हेतु दोमट से बलुअर दोमट भूमियाँ जिनका पी. एच. 7.0 से 7.5 हो, इसके लिए उत्तम हैं। खेत में जल निकास उत्तम होना चाहिये।

भूमि की तैयारी: खरीफ की फसल हेतु एक गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करना चाहिए एवं वर्षा प्रारम्भ होते ही 2-3 बार देशी हल या कल्टीवेटर से जुताई कर खरपतवार रहित करने के उपरान्त खेत में पाटा चलाकर समतल करें। दीमक से बचाव के लिये क्लोरपायरीफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 20-25 कि.ग्रा/हेक्टेयर के मान से खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिलाना चाहिये।

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिये रबी फसलों के कटने के तुरन्त बाद खेत की तुरन्त जुताई कर 4-5 दिन छोड़कर पलेवा करना चाहिए। पलेवा के बाद 2-3 जुताइयां देशी हल या कल्टीवेटर से कर पाटा लगाकर खेत को समतल एवं भुरभुरा बनावें। इससे उसमें नमी संरक्षित हो जाती है व बीजों से अच्छा अंकुरण

मिलता हैं।

बुआई का समय: खरीफ मूंग की बुआई का उपयुक्त समय जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई का प्रथम सप्ताह है एवं ग्रीष्मकालीन फसल को 15 मार्च तक बोनी कर देना चाहिये। बोनी में विलम्ब होने पर फूल आते समय तापक्रम वृद्धि के कारण फलियां कम बनती हैं अथवा बनती ही नहीं है। इससे इसकी उपज प्रभावित होती है।

उन्नत किस्मों का चयन: मूंग के लिये 8 किलो नत्रजन, 20 किलो स्फुर, 8 किलो पोटाश एवं 8 किलो गंधक प्रति एकड़ बोने के समय प्रयोग करना चाहिये।

मध्य प्रदेश लिये उन्नत जातियों का चयन निम्नलिखित जातियों का चुनाव उनकी विशेषताओं के आधार पर करना चाहिये।

बीज दर व बीज उपचार : खरीफ में कतार विधि से बुआई हेतु मूंग 20 कि.ग्रा./हे. पर्याप्त होता है। बसंत अथवा ग्रीष्मकालीन बुआई हेतु 25-30 कि.ग्रा/हे. बीज की आवश्यकता पड़ती है। बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम + केप्टान (1 + 2) 3 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। तत्पश्चात इस उपचारित बीज को विशेष राईजोबियम कल्चर की 5 ग्राम. मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोनी करें।

किस्म का नाम	अवधि (दिन)	उपज (क्विं./हे.)	प्रमुख विशेषताये
टॉम्बे जवाहर मूंग-3 (टी.जे. एम -3) जारी करने का वर्ष:-2006 केन्द्र का नाम:- जवहार लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर	60-70	10-12	● ग्रीष्म एवं खरीफदोनो के लिए उपयुक्त ● फलियां गुच्छो में लगती हैं ● एक फली मे 8-11 दाने ● 100 दानो का बजन 3.4-4.4 ग्राम ● पीला मोजेक एवं पाउडरी मिल्डयू रोग हेतु प्रतिरोधक
जवाहर मूंग -721 जारी करने का वर्ष: 1996 केन्द्र का नाम: कृषि महाविद्यालय इन्दौर	70-75	12-14	● पूरे मध्यप्रदेश में ग्रीष्म एवं खरीफदोनो मौसम के लिये उपयुक्त ● पौधे की उंचाई 53-65 सेमी ● 3-5 फलियाँ एक गुच्छे मे ● एक फली में 10-12 दाने ● पीला मोजेक एवं पाउडरीमिल्डयू रोग सहनशील
के - 851 जारी करने का वर्ष: 1982 केन्द्र का नाम:- चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौधोगिकी विवि., कानपुर	60-65 (ग्रीष्म) 70-80 (खरीफ)	8-10 10-12	● ग्रीष्म एवं खरीफदोनो मौसम के लिये उपयुक्त ● पौधे मध्यम आकार के (60-65 सेमी.) ● एक पौधे मे 50-60 फलियां ● एक फली मे 10-12 दाने ● दाना चमकीला हरा एवं बड़ा ● 100 दानो का वजन 4.0-4.5 ग्राम
एच.यू.एम. 1 (हम -1) जारी करने का वर्ष: 1999 केन्द्र का नाम:- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी	65-70	8-9	● ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो मौसम के लिये उपयुक्त ● पौधे मध्यम आकार के (60-70 सेमी.) ● एक पौधे मे 40-55 फलियाँ ● एक फली मे 8-12 दाने ● पीला मोजेक एवं पर्णदाग रोग के प्रति सहनशील
पी.डी.एम - 11 जारी करने का वर्ष: 1987 केन्द्र:-भारतीय दलहन अनुसंधान केन्द्र, कानपुर	65-75	10-12	● ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो मौसम के लिये उपयुक्त ● पौधे मध्यम आकार के (55-65 सेमी.) ● मुख्य शाखाये मध्यम (3-4) ● परिपक्व फली का आकार छोटा ● पीला मोजेक रोग प्रतिरोधी
पूसा विशाल जारी करने का वर्ष: 2000 केन्द्र:- भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र- नई दिल्ली	60-65	12-14	● ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिये उपयुक्त ● पौधे मध्यम आकार के (55-70 सेमी.) ● फली का साइज अधिक (9.5-10.5 सेमी.) ● दाना मध्यम चमकीला हरा ● पीला मोजेक रोग सहनशील

बुआई का तरीका: वर्षा के मौसम में इन फसलों से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने हेतु हल के पीछे पंक्तियों अथवा कतारों में बुआई करना उपयुक्त रहता है। खरीफ फसल के लिए कतार से कतार की दूरी 30-45 से.मी. तथा बसंत (ग्रीष्म) के लिये 20-22.5 से.मी. रखी जाती है। पौधे से पौधे की दूरी 10-15 से.मी. रखते हुये 4 से.मी. की गहराई पर बोना चाहिये।

खाद एवं उर्वरक : खाद एवं उर्वरक की मात्रा किलोग्राम /हे. होनी चाहिये।

नाइट्रोजन-20	फास्फोरस-40	
पोटाश-20	गंधक-25	जिंक-20

नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश उर्वरकों की पूरी मात्रा बुबाई के समय 5-10 सेमी. गहरी कूड़ में आधार खाद के रूप में दें।

सिचाई एवं जल निकास : प्राय: वर्षा ऋतु में मूंग की फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है फिर भी इस मौसम में एक वर्षा के बाद दूसरी वर्षा होने के बीच लम्बा अन्तराल होने पर अथवा नमी की कमी होने पर फलियां बनते समय एक हल्की सिंचाई आवश्यक होती है। बसंत एवं ग्रीष्म ऋतु में 10-15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल पकने के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देना चाहिये। वर्षा के मौसम में अधिक वर्षा होने पर अथवा खेत में पानी का भराव होने पर फालतू पानी को खेत से निकालते रहना चाहिये, जिससे मृदा में वायु संचार बना रहता है।

खरपतवार नियंत्रण: मूंग की फसल में नींदा नियंत्रण सही समय पर नहीं करने से फसल की उपज में 40-60 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है। खरीफ मौसम में फसलों में सकरी पत्ती वाले खरपतवार जैसे- सवा (इकाईनाक्लोक्लोवा कोलाकनम/ क्रुसगेली) दूब घास (साइनोडॉन डेक्टाइलोन) एवं चैडी पत्ती वाले पत्थरचटा (ट्रायन्थिमा मोनोगायना), कनकवा (कोमेलिना वेंघालेंसिस), महकुआ (एजीरेटम कोनिज्वाडिस), सफेद मुर्ग (सिलोसिया अर्जेसिया), हजारदाना (फाइलेन्थस निरूरी), एवं लहसुआ (डाइजेरा आरवेंसिस) तथा मोथा (साइप्रस रोटन्डस, साइप्रस इरिया) आदि वर्ग के खरपतवार बहुतायत निकलते हैं। फसल व खरपतवार की प्रतिस्पर्धा की क्रान्तिक अवस्था मूंग में प्रथम 30 से 35 दिनों तक रहती है। इसलिये प्रथम निंदाई-गुड़ाई 15-20 दिनों पर तथा द्वितीय 35-40 दिन पर करना चाहिये। कतारों में बोई गई फसल में व्हील हो नामक यंत्र द्वारा यह कार्य आसानी से किया जा सकता है। चूंकि वर्षा के मौसम में लगातार वर्षा होने पर निंदाई गुड़ाई हेतु समय नहीं मिल पाता साथ ही साथ श्रमिक अधिक लगने से फसल की लागत बढ़ जाती है। इन परिस्थितियों में नींदा नियंत्रण के लिये निम्न नींदानाशक रसायन का छिड़काव करने से भी खरपतवार का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

- **डॉ. मीनाक्षी आर्य**
  कृषि वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान
- **यशोवर्धन सिंह**
  शोधार्थी, पादप रोग विज्ञान
  रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विवि., झांसी (उ.प्र.)

खरीफ उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक

ग्रीष्म ऋतु में खेत का ध्यान रखने के महत्वपूर्ण सुझाव

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई एक महत्वपूर्ण कृषि पद्धति है जिसका उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है। मुख्य रूप से यह मिट्टी में रहने वाले रोगजनकों के जीवन चक्र को बाधित करके मिट्टी से होने वाली बीमारियों का प्रबंधन करने की एक रणनीति के रूप में कार्य करता है, जिससे उनकी आबादी कम हो जाती है और बाद के मौसमों में फसल संक्रमण का खतरा कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त गहरी जुताई से खरपतवार नियंत्रण में मदद मिलती है, जिससे खरपतवार के बीजों को मिट्टी में गहराई तक दबा दिया जाता है, जिससे उनका अंकुरण और उद्भव कम हो जाता है। इसके अलावा यह मिट्टी के वातन और संरचना में सुधार करता है, जिससे जड़ों का बेहतर प्रवेश, जल घुसपैठ और पौधों द्वारा पोषक तत्व ग्रहण करने में सुविधा होती है। इसके अलावा, गहरी जुताई के माध्यम से फसल के अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से उनका अपघटन तेज हो जाता है, जिससे बाद की फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्व मिट्टी में वापस आ जाते हैं। अंततः गर्मियों में गहरी जुताई अगली फसल के लिए मिट्टी तैयार करती है, जिससे कीट और बीमारी के दबाव में कमी के साथ ताजा बीज तैयार होता है, साथ ही बीज के अंकुरण और जड़ विकास के लिए मिट्टी की स्थिति में सुधार होता है, जिससे समग्र मिट्टी के स्वास्थ्य और अनुकूलित फसल उत्पादन में योगदान होता है।

बुआई से पहले कृषि क्षेत्रों में गोबर की खाद

गर्मी के मौसम में खरीफ फसलों की बुआई से पहले कृषि क्षेत्रों में गोबर की खाद को शामिल करना, मिट्टी की बनावट को बढ़ाने और फसल उत्पादन को अनुकूलित करने के लिए एक रणनीतिक अभ्यास है। एफवाईएम का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए, किसानों को मिट्टी में खाद के उचित समावेश को सुनिश्चित करने के लिए जुताई या जुताई के माध्यम से खेत तैयार करना शुरू करना चाहिए। आदर्श रूप से गोबर की खाद का प्रयोग खरीफ फसलों की बुआई से कई सप्ताह पहले किया जाना चाहिए, जिससे कार्बनिक पदार्थ को विघटित होने और मिट्टी में पोषक तत्वों को जारी करने के लिए पर्याप्त समय मिल सके। किसान मिट्टी की पोषक आवश्यकताओं और फसल के प्रकार के आधार पर अनुशंसित दर पर एफवाईएम को पूरे खेत में समान रूप से फैला सकते हैं। आवेदन के बाद समान वितरण और मिट्टी की सतह के साथ अधिकतम संपर्क सुनिश्चित करने के लिए एफवाईएम को हैरोइंग या जुताई के माध्यम से मिट्टी में शामिल किया जाना चाहिए। यह प्रक्रिया कार्बनिक पदार्थों के टूटने की सुविधा प्रदान करती है, जिससे पौधों के विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्व धीरे-धीरे जारी होते हैं। गर्मी के मौसम के दौरान मिट्टी में एफवाईएम को शामिल करके किसान मिट्टी की बनावट, उर्वरता और नमी बनाए रखने की क्षमताओं में सुधार कर सकते हैं, जिससे खरीफ फसलों के लिए इष्टतम विकास वातावरण तैयार हो सकता है। इसके अतिरिक्त एफवाईएम का उपयोग जैविक अपशिष्ट पदार्थों के पुनर्चक्रण और सिंथेटिक उर्वरकों पर निर्भरता को कम करके टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देता है। कुल मिलाकर खरीफ फसलों की बुआई से पहले गोबर की खाद का रणनीतिक अनुप्रयोग उच्च फसल पैदावार और कृषि क्षेत्रों में मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार में योगदान देता है।

खेत की मेड़ों को साफ रखा जाए

कृषि क्षेत्रों में यह सुनिश्चित करना कि खेत की परिधि के चारों ओर के मेड़ों को साफ रखा जाए, विभिन्न कारणों से आवश्यक है। स्वच्छ बांध मिट्टी के कटाव को रोकने और वर्षा या सिंचाई के दौरान पानी के बहाव को नियंत्रित करके प्रभावी जल प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बांधों को मलबे, खरपतवार और अन्य बाधाओं से मुक्त रखकर किसान उचित जल निकासी बनाए रख सकते हैं और जलभराव के जोखिम को कम कर सकते हैं, जो फसल के विकास और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। इसके अतिरिक्त, साफ बांध कीटों, खरपतवारों और बीमारियों के खिलाफ एक बाधा के रूप में काम करते हैं, फसलों को नुकसान से बचाने में मदद करते हैं और एक स्वस्थ बढ़ते वातावरण को सुनिश्चित करते हैं। इसके अलावा स्पष्ट बांध जुताई, रोपण और कटाई जैसी कृषि गतिविधियों के लिए खेत तक आसान पहुंच की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे परिचालन दक्षता बढ़ती है और श्रम लागत कम होती है। कुल मिलाकर इष्टतम फसल विकास को बढ़ावा देने, जल प्रबंधन में सुधार और समग्र कृषि उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए खेत के चारों ओर साफ बांध बनाए रखना आवश्यक है।

बुवाई से पहले सही बीजों के बारे में जानकारी

जब किसान बुआई के लिए बीज का चयन कर रहे हों तो उन्हें अपनी फसल की सफलता सुनिश्चित करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। सबसे पहले उन्हें उच्च उपज क्षमता वाले बीज किस्मों की पहचान करने के लिए कृषि विशेषज्ञों या स्थानीय विस्तार सेवाओं से सलाह लेनी चाहिए। मिट्टी के प्रकार, जलवायु और पानी की उपलब्धता जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए ऐसी किस्मों का चयन करना आवश्यक है जो उनके क्षेत्र की विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त हों। किसानों को उन बीजों को प्राथमिकता देनी चाहिए जो उनके क्षेत्र में प्रचलित कीटों और बीमारियों के प्रति प्रतिरोध या सहनशीलता प्रदर्शित करते हैं, रासायनिक हस्तक्षेप की आवश्यकता को कम करते हैं और फसल को संभावित नुकसान से बचाते हैं।

शीघ्र परिपक्वता, एकरूपता और सूखे या लवणता जैसे अजैविक तनावों के प्रति सहनशीलता जैसे कृषि संबंधी लक्षणों पर भी विचार किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त किसानों को बीज की ऐसी किस्मों का चयन करने के लिए बाजार की मांग और उपभोक्ता प्राथमिकताओं का आकलन करना चाहिए जो अच्छी कीमत दिलाएगी और बाजार की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। इस व्यापक दृष्टिकोण का पालन करके किसान बुआई के लिए बीज की किस्मों का चयन करते समय सूचित निर्णय ले सकते हैं, जिससे अंततः अधिक उत्पादक, लचीली और लाभदायक फसल प्राप्त होगी।

उपार्जित गेहूं को असमय वर्षा से बचाव के उपाय करें : श्री सिंह

रबी सीजन में गेहूं खरीदी कार्य की समीक्षा की

सीहोर। कलेक्टर प्रवीण सिंह ने रबी सीजन में गेहूं खरीदी कार्य की समीक्षा की। बैठक में जानकारी दी गई कि जिले में अभी तक 33064 किसानों से 257839.37 मीट्रिक टन गेहूं की खरीदी की जा चुकी है। जिले में 231 केन्द्र बनाए गए हैं। जिले में कुल 88991 किसानों ने उपार्जन के लिए पंजीयन कराया है। उन्होंने वर्तमान मौसम को दृष्टिगत रखते हुए असमय होने वाली वर्षा से उपार्जित गेहूं को सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त व्यवस्था के भी निर्देश दिए।

श्री सिंह ने किसानों की गेहूं की तौल शीघ्रता से करने के लिए उपार्जन केन्द्रों पर अतिरिक्त तौल कांटे एवं हम्मालों, तुलावटी की व्यवस्था समिति के माध्यम करने तथा गोदाम स्तरीय उपार्जन केन्द्रों पर उपार्जित गेहूं को उपार्जन दिवस में ही गोदाम में भण्डारण सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। श्री सिंह ने कहा कि भारतीय खाद्य निगम को उपार्जन के दौरान 'ए' मोड में गेहूं परिदान हेतु चिन्हित समिति स्तरीय केन्द्रों अथवा अन्य समिति स्तरीय केन्द्रों पर भी यथासम्भव कवर्ड स्थान पर गेहूं खरीदी की जाए, ताकि उपार्जित गेहूं को वर्षा से बचाया जा सके। उपार्जन केन्द्रों पर गेहूं की तौल के उपरांत बारदानों की तत्काल सिलाई कर ऊंचे पक्के स्थान पर स्टेकिंग लगाकर रखी जाए एवं वर्षा से बचाव के लिए तिरपाल आदि से कवर किया जाए।

कलेक्टर ने किसानों के गहूं को उपार्जन केन्द्र परिसर में लूज में संग्रहित नही कराने एवं गुणवत्ता परीक्षण में एफएक्यू पाए गये गेहूं को बोरों में भरकर रखे जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि उपार्जन केन्द्र के परिसर में वर्षा के पानी का भराव न हो यह सुनिश्चित कर लिया जाए एवं आवश्यक होने पर उपार्जन केन्द्र को अन्यत्र स्थानांतरित किया जाए। किसानों को अपनी उपज तिरपाल आदि से कवर कर लाने के लिए कहा जाये ताकि गेहूं वर्षा से सुरक्षित रहे।

बैठक में सीईओ जिला पंचायत आशीष तिवारी, केन्द्रीय सहकारी बैंक के सीईओ पी.एन. यादव, उपायुक्त सहकारिता सुधीर केथवास, उप संचालक कृषि के.के. पाण्डे, प्रभारी जिला आपूर्ति अधिकारी सुनिल बोहत, सुशील पंडित संहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित थे।

• निलेश निनामा
(पीएचडी स्कॉलर, सब्जी विज्ञान विभाग)
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

भिंडी फसल की उन्नत कृषि तकनीक

भारत देश के किसान विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती करते हैं। इनमें भिंडी का एक प्रमुख स्थान है। इसको लेडी फिंगर या ओकरा भी कहा जाता है। किसान भिंडी की अगेती खेती करके खूब मुनाफा कमा सकते हैं। गर्मियों में भिंडी की काफी मांग होती है क्योंकि इसमें विटामिन ए, सी समेत कई कई पोषक तत्व पाए जाते हैं।

आजकल कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कई नई तकनीक द्वारा भिंडी की खेती की जा रही है। इसके साथ ही कई उन्नत किस्म भी विकसित हो चुकी है जिनके द्वारा किसान भिंडी की फसल से अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं। मुख्य रुप से भिंडी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवणों जैसे कैल्शियम, फास्फोरस के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी, थाईमीन एवं रिबोफ्लेविन भी पाया जाता है। इसमें विटामिन ए तथा सी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। भिंडी के फल में आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। भिंडी का फल कब्ज रोगी के लिए विशेष गुणकारी होता है। मध्यप्रदेश में लगभग 23500 हेक्टेयर में भिंडी की खेती होती है। मध्यप्रदेश के सभी जिलों में इसकी खेती की जा सकती है। अधिक उत्पादन तथा मौसम की भिंडी की उपज प्राप्त करने के लिए संकर भिंडी की किस्मों का विकास कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया हैं। ये किस्में यलो वेन मोजैक वाइरस रोग को सहन करने की अधिक क्षमता रखती हैं। इसलिए वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर उच्च गुणवत्ता का उत्पादन कर सकते हैं।

उपयुक्त जलवायु: भिंडी की खेती के लिए उष्ण और नम जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके बीजों के जमाव के लिए करीब 20 से 25 डिग्री सेन्टीग्रेट तापमान चाहिए होता है। ध्यान दें कि गर्मी में 42 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा तापमान इसकी फसल को नुकसान पहुंचाता है, क्योंकि ऐसे में इसके फूल गिरने लगते हैं और सीधा असर इसकी उपज पर पड़ता है।

उपयुक्त भूमि: भिंडी की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है लेकिन हल्की दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है। इससे जल निकास अच्छी तरह हो जाता है। बता दें कि इसकी खेती के लिए भूमि में कार्बनिक तत्व होना जरूरी है साथ ही पीएच मान करीब 6 से 6.8 होना चाहिए। बता दें कि किसानों को खेती के पहले एक बार मिट्टी की जांच करा लेनी चाहिए।

खेत की तैयारी: इसकी खेती में सबसे पहले खेत की 2 से 3 बार जुताई कर लें। इसके साथ ही खेत को भुरभुरा करके पाटा चला लें ताकि खेत समतल हो जाए।

उन्नत किस्में: आजकल भिंडी की कई उन्नत किस्में विकसित हो चुकी हैं। इन किस्मों द्वारा किसान खेती करके फसल की उपज को बढ़ा सकते हैं। किसानों को भिंडी की किस्मों का चयन अपने क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी के अनुसार करना चाहिए।

पूसा ए-4: यह भिंडी की एक उन्नत किस्म है। यह प्रजाति 1995 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा निकाली गई है। यह एफिड तथा जैसिड के प्रति सहनशील है। यह यैलोवेन मोजैक विषाणु रोधी है। फल मध्यम आकार के गहरे, 12-15 सेमी लंबे तथा आकर्षक होते हैं। बोने के लगभग 15 दिन बाद से फल आना शुरू हो जाते हैं तथा पहली तुड़ाई 45 दिनों बाद शुरू हो जाती है। इसकी औसत पैदावार ग्रीष्म में 10 टन व खरीफ में 15 टन प्रति हेक्टेयर है।

परभनी क्रांति: यह किस्म पीत-रोगरोधी है। यह प्रजाति 1985 में मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभनी द्वारा निकाली गई है। फल बुआई के लगभग 50 दिन बाद आना शुरू हो जाते हैं। फल गहरे हरे एवं 15.18 सेंमी लम्बे होते हैं। इसकी पैदावार 9.12 टन प्रति हेक्टेयर है।

पंजाब-7: यह किस्म भी पीतरोग रोधी है। यह प्रजाति पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा निकाली गई है। फल हरे एवं मध्यम आकार के होते हैं। बुआई के लगभग 55 दिन बाद फल आने शुरू हो जाते हैं। इसकी पैदावार 8.12 टन प्रति हेक्टेयर है।

अर्का अभय: यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा निकाली गई हैं। यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी हैं। इसके पौधे ऊँचे 120-150 सेमी सीधे तथा अच्छी शाखा युक्त होते हैं।

अर्का अनामिका: यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर द्वारा निकाली गई है। यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है। इसके पौधे ऊँचे 120-150 सेमी सीधे व अच्छी शाखा युक्त होते हैं। फल रोमरहित मुलायम गहरे हरे तथा 5-6 धारियों वाले होते हैं। फलों का डंठल लम्बा होने के कारण तोड़ने में सुविधा होती है। यह प्रजाति दोनों ऋतुओं में उगाई जा सकती हैं। पैदावार 12-15 टन प्रति हेक्टेयर हो जाती हैं।

वर्षा उपहार: यह प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा निकाली गई है। यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी हैं। पौधे मध्यम ऊँचाई 90-120 सेमी तथा इंटरनोड पास-पास होते हैं। पौधे में 2-3 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं। पत्तियों का रंग गहरा हरा, निचली पत्तियां चौड़ी व छोटे छोटे लोब्स वाली एवं ऊपरी पत्तियां बड़े लोब्स वाली होती है। वर्षा ऋतु में 40 दिनों में फूल निकलना शुरु हो जाते हैं व फल 7 दिनों बाद तोड़े जा सकते हैं। फल चौथी पांचवीं गाठों से पैदा होते हैं। औसत पैदावार 9-10 टन प्रति हेक्टेयर होती है। इसकी खेती ग्रीष्म ऋतु में भी कर सकते हैं।

हिसार उन्नत: यह प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा निकाली गई है। पौधे मध्यम ऊँचाई 90-120 सेमी तथा इंटरनोड पास-पास होते हैं। पौधे में 3-4 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं। पत्तियों का रंग हरा होता हैं। पहली तुड़ाई 46-47 दिनों बाद शुरु हो जाती है। औसत पैदावार 12-13 टन प्रति हेक्टेयर होती है। फल 15-16 सेंमी लम्बे हरे तथा आकर्षक होते हैं। यह प्रजाति वर्षा तथा गर्मियों दोनों समय में उगाई जाती हैं।

वी.आर.ओ.-6: इस किस्म को काशी प्रगति के नाम से भी जाना जाता है। यह प्रजाति भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा 2003 में निकाली गई है। यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी हैं। पौधे की औसतन ऊँचाई वर्षा ऋतु में 175 सेमी तथा गर्मी में 130 सेमी होती है। इंटरनोड पासपास होते हैं। औसतन 38वें दिन फूल निकलना शुरु हो जाते हैं। गर्मी में इसकी औसत पैदावार 13.5 टन एवं बरसात में 18.0 टन प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

उपार्जन केन्द्रों का नियमित रूप से निरीक्षण करें : श्रीमती पाल

रीवा। कलेक्ट्रेट कार्यालय में आयोजित बैठक में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने समर्थन मूल्य पर गेहूं, चना तथा सरसों उपार्जन की समीक्षा की। कलेक्टर ने कहा कि सभी खरीदी केन्द्रों में उपार्जन के लिए पर्याप्त मात्रा में बारदाने उपलब्ध कराएं। खरीदी केन्द्रों में किसानों की सुविधा के लिए छाया, पानी की समुचित व्यवस्था करें। उपार्जित गेहूं का उसी दिन परिवहन कराकर सुरक्षित भण्डारण कराएं। सभी सहकारी समितियों को उपार्जन के संबंध में विस्तृत निर्देश दिए गए हैं। इन निर्देशों का पालन न करने तथा लापरवाही बरतने वाली समितियों पर कठोर कार्यवाही की जाएगी। सभी एसडीएम तथा तहसीलदार उपार्जन केन्द्रों का नियमित रूप से निरीक्षण करें। निरीक्षण में किसी भी तरह की कमी पाए जाने पर उसे दूर कराने का प्रयास करें। किसी भी तरह की अनियमितता पाए जाने पर संबंधितों के विरूद्ध कार्यवाही प्रस्तावित करें। कलेक्टर ने महाप्रबंधक जिला सहकारी बैंक को वेतनवृद्धि रोकने का नोटिस देने के निर्देश दिए। श्रीमती पाल ने कहा कि जिन गोदामों को ब्लैकलिस्टेड किया गया है उनमें उपार्जित गेहूं का भण्डारण न कराएं।

कलेक्टर ने कहा कि अपर कलेक्टर भी खरीदी केन्द्रों का नियमित रूप से निरीक्षण करें। खरीदी केन्द्रों एवं गोदामों की मैपिंग गूगल शीट में करके उसके माध्यम से निगरानी करें। उपार्जन से जुड़े अधिकारियों की प्रतिदिन गूगल मीट के माध्यम से बैठक लेकर व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराएं। उपार्जन केन्द्र में किसानों को किसी भी तरह की परेशानी नहीं होनी चाहिए। उपार्जित गेहूं का सुरक्षित भण्डारण और समय पर किसान को भुगतान सुनिश्चित कराएं। उप संचालक कृषि तथा उनके अधीनस्थ अधिकारी भी खरीदी केन्द्रों का नियमित रूप से निरीक्षण करें। इस वर्ष नियमित अंतराल से वर्षा हो रही है। इसलिए उपार्जित गेहूं का तत्काल उठाव सुनिश्चित कराएं। अपर कलेक्टर ट्रांसपोर्टरों की बैठक लेकर अनुबंधित ट्रकों की सूची के अनुसार उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करें।

बैठक में अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी ने बताया कि रीवा जिले में 78 तथा मऊगंज जिले में 26 खरीदी केन्द्रों में गेहूं का उपार्जन किया जाएगा। जिले में 12 खरीदी केन्द्रों में चना तथा सरसों का उपार्जन किया जा रहा है। उपार्जन के लिए तैनात नोडल अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

निरीक्षण के दौरान तीन खरीदी केन्द्रों में कमिां पाई गई थी। इनके केन्द्र प्रभारियों को नोटिस जारी कर दिया गया है। बैठक में जिला महाप्रबंधक सहकारी बैंक ज्ञानेन्द्र पाण्डेय, उपायुक्त सहकारिता अशोक शुक्ला, सहायक आपूर्ति अधिकारी सुभाष द्विवेदी तथा संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

मिट्टी को नष्ट होने से बचाने के लिये नरवाई को न जलायें

शिवपुरी। उप संचालक कृषि यू.एस. तोमर ने अपील कर कहा है कि अभी हाल ही में गेहूं, जौ (जवा) या अन्य किसी भी फसल की कटाई हो चुकी है जो कि अपने मध्यप्रदेश या सम्पूर्ण भारत में अधिकतर किसान भाई हार्वेस्टर से कटाई करते हैं, इसके उपरांत जो डंठल होता है या फसल का अवशेष जमीन में लगा हुआ 90 प्रतिशत भाग बच जाता है उसको नष्ट करने के लिए अपने ही खेत में किसान एक सरल रास्ता चुनते हैं और आसानी से आग लगा देते हैं।

खेत में आग लगाना घातक होता है। इससे हमारी जमीन में लाखों-करोड़ों सूक्ष्म जीव जो कि मिट्टी को बनाने में सहायक का कार्य करते हैं या मिट्टी को बनाने में मदद करते हैं, वह सभी लाभदायक सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाते हैं। साथ ही मिट्टी की जो उपजाऊ शक्ति है, मिट्टी की ऊपरी परत में विद्यमान होती है, वह भी नष्ट हो जाती है।

एक इंच मिट्टी के बनने में हजारों वर्ष लग जाते हैं लेकिन छोटे से फायदे के लिए खेत में आग लगा देना हमारे लिए कितना नुकसानदायक हो सकता है। क्या आप जानते हैं कि घास तथा पत्तियों को जलाने पर उससे जो अवशेष बचता है जिसको राख या भस्म कहते हैं, इसमें बीज को या पौधों को उगा नहीं सकते हैं। यदि बिना विचार कर खेत में आग लगा देने से जमीन में विद्यमान लाभदायक सूक्ष्म जीव जो कि खेती के लिए बहुत ही लाभदायक होते हैं और मिट्टी बनाने में सहायता करते हैं वह सभी नष्ट हो जाते हैं साथ ही किसान का मित्र केचुआ भी नष्ट हो जाता है, जो खाद बनाने का कार्य करता है। इसलिए कभी भी खेत में आग नहीं लगाना चाहिए।

आग लगाने के बजाय कटाई के बाद जो फसल का अवशेष बचता है उसमें कल्टीवेटर की सहायता से या हेरो की सहायता से या प्लाऊ की सहायता से उसी खेत में मिट्टी में मिला दें जिससे खेत में ही बिना खाद डाले खाद बनकर तैयार हो जायेगी। जिससे जमीन की मिट्टी की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ेगी और फसलों की पैदावार में भी इजाफा होगा।

कलेक्टर ने गेहूं खरीदी में पारदर्शिता बरतने के दिए निर्देश

रतलाम। कलेक्टर राजेश बाथम ने जिले के जावरा तथा आलोट क्षेत्र में समर्थन मूल्य पर किए जा रहे गेहूं खरीदी तथा वेयरहाउस में भंडारण का निरीक्षण किया। उनके साथ अपर कलेक्टर राधेश्याम मंडलोई भी थे।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने ग्राम हसनपालिया खरीदी केंद्र के अंतर्गत बडायला चौरासी भंडारण केंद्र, ग्राम माताजी बडायला के अंतर्गत जावरा स्थित वेयरहाउस में भंडारण केंद्र तथा आलोट क्षेत्र के खरीदी केंद्र मकनपुरा के ताल स्थित भंडारण केंद्र पहुंचकर भंडारण व्यवस्था का निरीक्षण किया। श्री बाथम ने निर्देशित किया कि अनाज का नुकसान नहीं हो, भंडारण में समस्त व्यवस्था शासन के निर्देशानुसार सुनिश्चित की जाए, उठाव शीघ्र हो। भंडारण के लिए पर्याप्त जगह बनी रहे, बारदाना की पूर्ण उपलब्धता हो। इसके अलावा अन्य बिंदुओं पर भी निर्देशित किया। इस दौरान जावरा एसडीम राधा महंत, आलोट एसडीएम सुनील जायसवाल भी उपस्थित रहे।

गेहूं उपार्जन में लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी: श्री सक्सेना

कलेक्टर ने किया मां यशोधरा वेयर हाउस और खरीदी केन्द्र घुंसौर का औचक निरीक्षण

जबलपुर। कलेक्टर दीपक सक्सेना ने शहपुरा के पास स्थित माँ यशोधरा वेयर हाउस और खरीदी केन्द्र घुंसौर क्रमांक 1 का औचक निरीक्षण किया। खरीदी केन्द्र में कचरा युक्त नॉन एफएक्यू गेहूं मिलने पर कलेक्टर ने कृषक से कहा कि गेहूं साफ करायें या गेहूं की सफाई के लिये निर्धारित 20 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से राशि समिति में जमा करें, जिसकी पावती दी जायेगी। समिति फिर गेहूं की सफाई करायेगी। उन्होंने कृषकों से कहा कि वे साफ-सुधरा एफएक्यू गेहूं ही लायें। किसान स्लॉट बुकिंग के बाद ही अपनी फसल को खरीदी केन्द्र में लायें। कलेक्टर ने निरीक्षण के दौरान गेहूं की तुलाई, उनकी सिलाई व टैग की जांच की साथ ही खरीदी की हुई गेहूं की बोरियों से गेहूं के सैंपल निकलवाकर गेहूं की गुणवत्ता की जांच की। उन्होंने कहा कि उपार्जन नियमों के अनुसार ही गेहूं खरीदी जायेगी। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जावेगी। निरीक्षण के दौरान शहपुरा एसडीएम पीयूष दुबे, तहसीलदार व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

किसानों को पराली न जलाने की सलाह

श्योपुर। कलेक्टर लोकेश कुमार जांगिड द्वारा खरीफ एवं रबी फसलों की कटाई के पश्चात फसल अवशेष पराली में आग न लगाने की सलाह किसान भाईयों को दी गई है। इस संबंध में अवगत कराया गया है कि सरकार द्वारा खेतों में पराली जलाने की घटनाओं की मॉनीटरिंग सेटेलाइट के माध्यम से की जा रही है। किसान भाई गेहूं की फसल कटाई पश्चात् नरवाई में आग न लगायें, क्योंकि इससे पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि की उर्वरता एवं उत्पादकता में कमी होने की संभावना होती है। किसान भाई कुछ उपयोगी कृषि यंत्रों जैसे बेलर, रीपर कम बाइंडर, स्ट्रारीपर, सुपर सीडर एवं जीरो टिलेज, सीड ड्रिल के उपयोग से पराली का प्रबंधन कर सकते हैं। पर्यावरण विभाग के नोटिफिकेशन द्वारा जारी निर्देशों में पराली जलाने की घटना पर संबंधित कृषकों पर अर्थदण्ड अधिरोपित करने का प्रावधान किया गया है। जिसके अनुसार 2 एकड़ से कम रकबे पर 2500 रुपये, 2 से 5 एकड़ तक रकबे में पराली जलाने पर 5 हजार रुपये तथा 5 एकड़ से अधिक पर 15 हजार रुपये अर्थदण्ड का प्रावधान है। यदि कोई भी किसान अपने खेत की पराली में आग लगाते हैं तो उक्त निर्देशों के अनुरूप दण्ड अधिरोपण की कार्यवाही की जायेगी।

महिंद्रा ने 40 लाख ट्रैक्टर बेचकर हासिल की नई उपलब्धि

मुंबई। दुनिया की सबसे बड़ी ट्रैक्टर विनिर्माता, महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने मार्च 2024 में निर्यात सहित 40 लाख ट्रैक्टर बेचकर नई उपलब्धि हासिल की है। महिंद्रा की अगली पीढ़ी के युवो ट्रैक्टर प्लेटफॉर्म पर आधारित महिंद्रा युवो टेक प्लस इस उपलब्धि को चिह्नित करता है, जो महिंद्रा की ज़हीराबाद संयंत्र से शुरू हुआ है। यह महिंद्रा का सबसे नया ट्रैक्टर संयंत्र और महिंद्रा ट्रैक्टरों के लिए वैश्विक उत्पादन केंद्र है।

अमेरिकी कंपनी इंटरनेशनल हार्वेस्टर इंक के साथ साझेदारी में 1963 में अपना पहला ट्रैक्टर लॉन्च करने के बाद, महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने 2004 में 10 लाख ट्रैक्टर के उत्पादन का आंकड़ा पार कर लिया और फिर 2009 में मात्रा के लिहाज़ से दुनिया की सबसे ज्यादा बिकने वाले फार्म ट्रैक्टर विनिर्माता होने का दावा किया। इसके 9 साल बाद 2013 में, महिंद्रा ने 20 लाख ट्रैक्टर के उत्पादन की उपलब्धि हासिल की और फिर 2019 में यह आंकड़ा 30 लाख को पार कर गया। सिर्फ 5 साल बाद, वित्त वर्ष '24 में, महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने गर्व से अपना 40 लाखवां ट्रैक्टर बेचा। पूरे वित्त वर्ष में, महिंद्रा ट्रैक्टर ब्रांड ने 2 लाख से अधिक ट्रैक्टर की शानदार बिक्री का स्तर भी हासिल किया।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड के अध्यक्ष – कृषि उपकरण क्षेत्र, हेमंत सिक्का ने कहा, हमें खेती के तौर-तरीके में बदलाव लाने और जीवन को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से प्रेरित होकर अपना 40 लाख वां महिंद्रा ट्रैक्टर को बेचने में बहुत गर्व महसूस हो रहा है। साथ ही हम दशकों के नेतृत्व तथा महिंद्रा ट्रैक्टर के 60 साल के निरंतर प्रयास का जश्न मना रहे हैं और यह सब एक ही साल में हो रहा है।

परिवर्तन यात्रा की शुरुआत के मौके पर, इन उपलब्धियों के साथ मैं अपने ग्राहकों, हमें हर दिन प्रेरित करने वाले किसानों के साथ-साथ हमारे भागीदारों और हमारी टीमों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

महिंद्रा ट्रैक्टर्स के मुख्य कार्यकारी, विक्रम वाघ ने कहा कि, महिंद्रा फार्म डिविज़न में यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। 40 लाख ट्रैक्टर की आपूर्ति हमारे ब्रांड के उद्देश्य और भारत में खेती के बारे में हमारी गहरी समझ पर ग्राहकों के भरोसे का प्रमाण है। पिछले 5 साल शानदार रहे हैं और इस दौरान हमने सबसे तेज़ी से 10 लाख का आंकड़ा पार किया। हम ट्रैक्टरों के व्यापक पोर्टफोलियो के साथ अपने ग्राहकों की विविध ज़रूरत को पूरा करना जारी रखेंगे, साथ ही वैश्विक स्तर पर सबसे पहले प्रयोग की जाने वाली प्रौद्योगिकी और बेजोड़ विश्वसनीयता प्रदान करते हुए किसानों को ऊपर उठने में मदद करेंगे।

60 साल में, महिंद्रा ने 390 से अधिक ट्रैक्टर मॉडलों की विविध रेंज को शामिल कर अपनी पेशकशों का विस्तार किया है। इस अवधि के दौरान, महिंद्रा ट्रैक्टर्स ने देश भर में 1200 से अधिक डीलर भागीदारों का एक मजबूत नेटवर्क भी स्थापित किया, जिसमें ग्राहक को केंद्र में रखा गया है और इसने ब्रांड को 40 लाख महिंद्रा ट्रैक्टरों ग्राहको को बिक्री, सेवा और स्पेयर समर्थन के अद्वितीय स्तर प्रदान करने में सक्षम बनाया।

छह महाद्वीपों के 50 से अधिक देशों में फैली वैश्विक उपस्थिति के साथ, महिंद्रा ट्रैक्टर्स के लिए अमेरिका, भारत के बाहर सबसे बड़ा बाज़ार है। हाल ही में मित्सुबिशी महिंद्रा एग्रीकल्चर मशीनरी, जापान के सहयोग से विकसित अपने ग्लोबल लाइट वेट ट्रैक्टर प्लेटफॉर्म ओजा (ओजेए) का अनावरण करने के बाद, महिंद्रा ने हाल ही में अमेरिका में ओजा की बिक्री शुरू की है।

ओजा के साथ, महिंद्रा ट्रैक्टर्स आसियान क्षेत्र में प्रवेश करेगी, जिसकी शुरुआत 2024 में थाईलैंड से होगी और बाद कंपनी 2025 में यूरोप में प्रवेश करेगी, जिससे महिंद्रा ट्रैक्टर्स को वैश्विक ट्रैक्टर बाज़ार में अग्रणी ट्रैक्टर ब्रांड के रूप में अपनी स्थिति मज़बूत करने में मदद मिलेगी।

महाधन एग्रीटेक का हाइफा समूह से करार

नयी दिल्ली। कृषि क्षेत्र की कंपनी महाधन एग्रीटेक लि. ने शुक्रवार को कहा कि भारत और अन्य देशों में फसलों की उपज बढ़ाने के मकसद से उसने विशेष उर्वरकों को बढ़ावा देने के लिए इजराइल स्थित हाइफा समूह के साथ गठजोड़ किया है। महाधन एग्रीटेक लिमिटेड (एमएएल) दीपक फर्टिलाइजर्स एंड पेट्रोकेमिकल्स कॉपोरेशन लिमिटेड (डीएफपीसीएल) के पूर्ण-स्वामित्व वाली अनुषंगी है।

डीएफपीसीएल के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक शैलेश सी मेहता ने एक बयान में कहा, 'हमारा मानना है कि यह साझेदारी कृषि क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लेकर आएगी जिससे किसान सशक्त होंगे।'

उन्होंने कहा कि एमएएल-हाइफा की पेशकश पानी की किल्लत की स्थिति में कृषि गतिविधियों का समर्थन करेगी और पौधों में पोषक तत्वों के अवशोषण और उपयोग दक्षता में भी काफी वृद्धि करेगी।

हाइफा समूह के मुख्य कार्यपालक अधिकारी मॉटी लेविन ने कहा, 'हमारा लक्ष्य नवीनतम प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर भारतीय कृषि की बढ़ती जरूरतों और किसानों की प्राथमिकताओं पर सक्रियता से काम करना है।' वर्ष 1966 में स्थापित हाइफा समूह विशेष उर्वरकों और पौधों के पोषण प्रौद्योगिकियों का वैश्विक आपूर्तिकर्ता है।

इन्क्यूबेटीज ने बिजनेस की समस्याओं से कराया अवगत

ग्वालियर। कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के सेंटर फॉर एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन एंड इंटरप्रेन्योरशिप में डी.पी.आई.आई.टी. पंजीकृत इन्क्यूबेटीज के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यक्रम की अध्यक्षता नोडल अधिकारी डॉ. वाय.डी. मिश्रा द्वारा की गई।

इस कार्यशाला के माध्यम से सी.ए.आई.ई. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आदित्य सिंह ने सभी इनक्यूबिटीज से उनके बिजनेस के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की। चर्चा के दौरान सभी इनक्यूबिटीज ने अपने बिजनेस सम्बन्धी समस्याओं को बताया और सी.ए.आई.ई. से उनके समाधान के बारे में बातचीत की। डॉ. मिश्रा ने सी.ए. आई.ई. की तरफ से दी जाने वाली विभिन्न सुविधाओं जैसे मार्केटिंग, ब्राडिंग, लिंकेज, लोगो पंजीकरण, एफ.एस.एस.ए.आई. पंजीकरण, बिजनेस प्लान, सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी और डी.पी.आई.आई.टी. पंजीकरण के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस हाइब्रिड मोड की कार्यशाला में 15 इनक्यूबिटीज ने भाग लिया।

अब किसानों को मिलेगा नैनो यूरिया प्लस कृषि मंत्रालय ने जारी की अधिसूचना

नई दिल्ली। कृषि मंत्रालय ने भारत में इफको द्वारा बनाए जाने वाले नैनो यूरिया (द्रव) की संरचना को निर्दिष्ट करते हुए एक असाधारण गजट आदेश जारी किया है। कृषि मंत्रालय की संयुक्त सचिव सुश्री योगिता राणा द्वारा हस्ताक्षरित, नैनो यूरिया पर यह दूसरी अधिसूचना है जहां संरचना को संशोधित किया गया है। पहली अधिसूचना मार्च में जारी की गई थी। नई संरचना में ह की मात्रा (वजन के प्रतिशत के रूप में) बढ़ा दी गई है अब इसे नैनो यूरिया (द्रव) 16 कहा जाएगा।

नैनो यूरिया (द्रव) 16 के विनिर्देश, आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशन तिथि (15 अप्रैल 2024) से तीन साल की अवधि के लिए प्रभावी होंगे। अधिसूचना अनुसार इसमें कुल नाइट्रोजन (एन. के रूप में), वजन के अनुसार न्यूनतम 16 प्रतिशत होना चहिए, पीएच 4 और 8.5 के बीच होना चाहिए, सीपी में चिपचिपाहट- 5 और 30 के बीच होना चहिए, डीएलएस विश्लेषण के अनुसार हाइड्रोडायनामिक कण आकार न्यूनतम 50 प्रतिशत सामग्री 20-80 एनएम की सीमा में होना चाहिए, सतह चार्ज/जीटा क्षमता- 15 से अधिक होनी चाहिए।इस आदेश का उद्देश्य कृषि प्रयोगों में इसकी गुणवत्ता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करते हुए नैनो यूरिया (द्रव) 16 के लिए विशिष्ट पैरामीटर स्थापित करना है।

यह अच्छे मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, किसानों की लाभप्रदता और एक स्थायी पर्यावरण का लक्ष्य रखता है। यह सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपलब्धता और दक्षता को भी बढ़ाता है। यह एक क्लोरोफिल चार्जर, उपज बूस्टर है और जलवायु स्मार्ट खेती में मदद करता है। इफको ने नैनो यूरिया प्लस की कीमत में कोई वृद्धि नहीं की है क्योंकि यह केवल 225 रुपये प्रति 500 मिलीलीटर की बोतल पर उपलब्ध है। उल्लेखनीय है कि अब देशभर में किसान नैनो यूरिया को स्वीकार करने लगे हैं। नैनो यूरिया का यह एडवांस कॉम्बिनेशन पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना पौधों को समग्र रूप से अच्छे और स्वस्थ विकास में मदद करेगा।

प्राकृतिक चिकित्सा से मुर्गियों को रखे स्वस्थ्य

● डॉ. उमा कुमरे परते
अतिरिक्त उपसंचालक पशु सांख्यिकी प्रभाग संचनालय पशुपालन एवं डेयरी विभाग भोपाल (म.प्र.)

पोल्ट्री आज भारत में मांस का प्रमुख स्रोत है। कुल मांस खपत में इसकी हिस्सेदारी 28 प्रतिशत है, जबकि दस साल पहले यह 14 प्रतिशत थी। इसने अपने दो प्रतिस्पर्धियों-बीफ और वील, और भैंस के मांस को पीछे छोड़ दिया है। उच्च मटन की कीमतें, गोमांस और सूअर के मांस पर धार्मिक प्रतिबंध, और तटीय क्षेत्रों के बाहर मछली की सीमित उपलब्धता ने पोल्ट्री मांस को भारत में सबसे पसंदीदा और सबसे अधिक खपत मांस बनाने में मदद की है। घरेलू उत्पादन के विस्तार और एकीकरण में वृद्धि ने पोल्ट्री मांस की कीमतों को नीचे की ओर धकेल दिया है और इसकी खपत को प्रोत्साहित किया है।

प्रोटीन के बहुत सारे स्रोत हैं लेकिन ब्रॉयलर के बिना मांग को पूरा करना संभव नहीं है। क्योंकि ब्रायलर पालन की अवधि बहुत कम है और 36-42 दिनों के भीतर यह विपणन के लिए तैयार है और मानव उपभोग के लिए उपयुक्त है। यह किसान को बहुत कम समय में लाभ भी देता है। ब्रॉयलर का मांस हम सभी के लिए लोकप्रिय है। पोल्ट्री के अंडे और मीट प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं। पोल्ट्री के मांस पौष्टिक, स्वादिष्ट होते हैं और इसमें वसा कम होती है। इसका स्वास्थ्य पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता है।

पुदीना

पुदीना एक बहुमुखी जड़ी बूटी है जिसके मनुष्यों और जानवरों के लिए कई लाभ हैं; मुर्गियां कोई अपवाद नहीं हैं। मुर्गियों के आहार में पुदीने को शामिल करने के कुछ फायदे यहां दिए गए हैं।

कीट विकर्षक

पुदीने में एक मजबूत गंध होती है जो कृन्तकों और कीड़ों जैसे कई कीटों के लिए अप्रिय होती है। अपने चिकन कॉप के पास बढ़ते टकसाल इन अवांछित आगंतुकों को खाड़ी में रखने में मदद कर सकते हैं जबकि आपकी मुर्गियों को एक स्वादिष्ट इलाज दे सकते हैं।

पाचन स्वास्थ्य

पुदीना अपने पाचन लाभों के लिए जाना जाता है। यह मुर्गियों को अपने भोजन को अधिक कुशलता से पचाने में मदद कर सकता है, जिससे खट्टी फसल जैसे पाचन मुद्दों का खतरा कम हो जाता है, एक ऐसी स्थिति जहां फसल प्रभावित हो जाती है और किण्वन भोजन से भर जाती है।

श्वसन स्वास्थ्य

पुदीने में मेन्थॉल होता है, एक यौगिक जो भीड़ को साफ करने और श्वसन स्वास्थ्य में सुधार करने में सहायता कर सकता है। पुदीने का सेवन करने वाली मुर्गियों को श्वसन संबंधी समस्याओं से राहत का अनुभव हो सकता है, खासकर ठंड के महीनों के दौरान जब ऐसी समस्याएं अधिक प्रचलित होती हैं।

तनाव से राहत

पुदीने का मुर्गियों पर शांत प्रभाव पड़ता है, तनाव कम होता है और विश्राम को बढ़ावा देता है। एक खुश, तनाव मुक्त चिकन लगातार अंडे देने की संभावना है और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से कम प्रवण है।

गर्मियों के दिनों में मुर्गियों में तनाव को कम करने के लिए आहार के साथ पीने के पानी मे पुदीने का उपयोग

प्रतिउपचायक और विटामिन

पुदीना विटामिन ए और सी और प्रतिउपचायक का एक अच्छा स्रोत है, जो एक स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली का समर्थन करने में मदद करता है। एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली आपकी मुर्गियों को संक्रमण और बीमारियों से लड़ने में मदद कर सकती है।

शोध कार्य :

पुदीना के पत्तों के पेस्ट के विकास और ब्रॉयलर पर प्रदर्शन के प्रभाव की जांच करने के लिए पांच सप्ताह तक की उम्र के 45 दिन पुराने ब्रॉयलर पर प्रयोग किया गया था। 45 दिन पुराने ब्रॉयलर को बेतरतीब ढंग से पांच समूहों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक में 4 चूजों के चार उप समूह थे। नियंत्रण (प्रथम) समूह को मानक ब्रॉयलर आहार प्राप्त हुआ। दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें समूह के चूजों को क्रमश: पुदीना के पत्तों के पेस्ट 2.5, 5.0, 7.5 और 10 ग्राम के साथ पूरक मानक ब्रॉयलर प्राप्त हुए। परिणामों से पता चला कि पुदीना के पत्तों के विभिन्न स्तर के पेस्ट का शरीर के वजन, फ़ीड सेवन और ब्रॉयलर के वजन में वृद्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। पुदीना के पत्तों के पेस्ट के साथ पूरक फ़ीड पर ब्रॉयलर की फ़ीड दक्षता में भी सुधार किया गया था।

निष्कर्ष :

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ब्रॉयलर के पानी में ताजे पुदीना के पत्तों के पेस्ट के पूरक का लाभकारी प्रभाव शरीर के वजन, वजन में वृद्धि और ब्रॉयलर के फ़ीड रूपांतरण अनुपात पर पड़ा था। आर्थिक दृष्टिकोण से, ताजे पुदीना के पत्तों के पेस्ट ञ्च 10.0 ग्राम के साथ पूरक पानी सभी उपचारों की तुलना में सबसे अच्छा पाया गया।

गर्मियों में दुधारू पशुओं की देखभाल

● डॉ. अशोक सिंह, पूर्व प्राध्यापक एवं प्रभारी
पशु अनुवांशिकी एवं अभिजनन विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय महू (म.प्र.)

गर्मी के दिनों में पशुओं के शरीर का तापमान कम करने का मुख्य साधन वाष्पीकरण है जिससे शरीर की सतह पर पसीने के रूप में जल का वाष्पीकरण होता है वाष्पीकरण के लिए उष्मा शरीर से प्राप्त होती है और शरीर को ठण्डा रखने के लिए गर्मियों में पशुओं को दो बार नहलाना चाहिए। विशेष रूप से दुधारू संकर गायों व भैंसों को सुबह पानी पिलाते समय व शाम को दूध निकालने से पहले खुरहरा करके नहलाऐं।

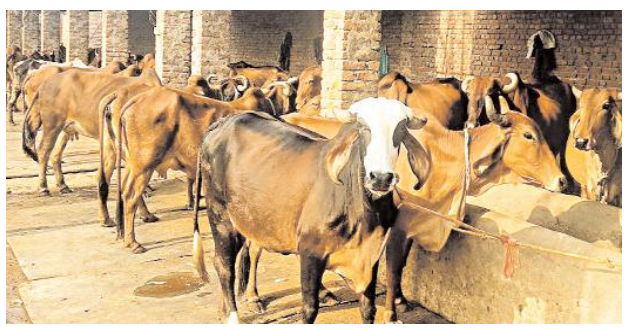

- देसी गायों में शरीर का सुविधाजनक तापमान 27 डिग्री सेंटीग्रेट होता है और संकर गायों में 21 डिग्री सेंटीग्रेट। इससे अधिक तापमान होने पर दुधारू पशुओं की आहार ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है व दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है। अत: पशुशाला का तापमान सामान्य बनाये रखने के लिए उसके दरवाजे व खिड़कियों पर टाट की बोरियां बॉध कर दिन में दो-तीन बार पानी छिड़कें।
- गर्मियों में पशुओं को हरे चारे की आपूर्ति हेतु सुडान चरी-मल्टीकट बाजरा व अफ्रीकन टाल मक्का लगानी चाहिए क्योंकि पशु गर्मियों में रेशेदार आहार कम पसंद करता है।
- दुधारू पशुओं में टीन शेड के नीचे नहीं बॉधना चाहिए क्योंकि टीन शेड का तापमान अधिक रहता है जो पशुओं के लिए असहनीय होता है।
- गर्मी के कारण गायों में कारटीजोल हारमोन बढ़ जाता है इससे गायों में रोग प्रतिरोधी क्षमता हेतु आवश्यक प्रोटीन इम्यूनोग्लोब्युलिन कम हो जाती है और बीमारियों का संक्रमण बढ़ जाता है अत: अप्रैल-मई में दुधारू पशुओं को गलघोंटू, एन्थ्रेक्स के लिए टीकाकरण करवाना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को छायादार खुले बाड़े में बॉधना चाहिए और सुबह-शाम पानी का छिड़काव करना चाहिए तथा बंद आवास में वायु निकास हेतु पंखा लगाना चाहिए।
- कच्चा फर्श उष्मा का कुचालक होता है और पशुओं के लिए सबसे आरामदायक होता है अत: रात के समय दुधारू पशुओं को कच्चे व खुले बाड़े में छोड़ना चाहिए।
- गर्मियों में पशुबाड़े में पशुओं की संख्या कम होनी चाहिए ताकि प्रत्येक पशु को समुचित खुला स्थान उपलब्ध हो सके।
- गर्मियों में दुधारू पशुओं को स्वच्छ व ताजा ठण्डा पानी पिलाना दुग्धवर्धक होता है।
- उचित किस्म का हरा चारा जैसे- ज्वार-चरी इत्यादि। लाभकारी दूध उत्पादन के लिए सबसे सस्ता और अच्छा पशु आहार है। लगभग 8 किग्रा. हरा चारा 1 किग्रा. दाने का कार्य करता है अत: पशुओं के आहार में हरे चारे का समावेश अवश्य करें।
- अच्छी किस्म का हरा चारा भरपूर मात्रा में उपलब्ध होने पर पॉच किग्रा. तक दूध उत्पादन बिना दाना खिलाये कायम रखा जा सकता है और उससे ज्यादा दूध देने वाली गाय व भैंस के आहार में प्रति 2-2.5 किलोग्राम दूध उत्पादन के लिए 1 किलो अतिरिक्त संतुलित दाना खिलाना आवश्यक है।
- यदि किसी कारणवश अच्छी किस्म का हरा चारा उपलब्ध न हो पाये तो दुधारू पशुओं को संतुलित दाने का 1 किलोग्राम उसके शारीरिक रखरखाव के लिए और 1 किग्रा/2.5 लीटर दूध उत्पादन के लिए खिलाया जाना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को आहार प्रतिदिन नियमित समय पर खिलाना चाहिए और आहार सामग्री में अचानक अधिक परिवर्तन नही किया जाना चाहिए।
- दुधारू पशुओं के लिए स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था इस तरह करें कि पशु जब भी चाहे वह पानी पी सके।
- ब्याने के बाद विशेष रूप से ध्यान रखें कि गाय या भैंस पूरी जर ठीक तरह 6-7 घण्टे में डाल दे और कुछ दिनों तक उसके यौनिद्वार के आसपास की सफाई अति आवश्यक है।
- साधारणत: पशुशाला में प्रत्येक दुधारू पशु के लिए 35 वर्ग फीट ढका हुआ स्थान तथा 80 वर्ग फिट खुला स्थान और उसमें उचित आकार की बनी हुई दो फिट लम्बी चारे दाने की मेन्जर की व्यवस्था करनी चाहिए।
- लाभकारी दुधारू पशुपालन के लिए उत्तम नस्ल के अधिक दूध उत्पादन क्षमता वाले पशु ही पालें। ऐसे पशुओं का चुनाव या तो उनकी नस्ल, वंशावली और दुग्ध उत्पादन ऑकडों के आधार पर किया जाता है।

● जागृति बोरकर ● पुष्पा झारिया
● डॉ. संध्या मुरे
प्रमुख, कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदा

हरी पत्तेदार सब्जियों का आहारीय महत्व

वर्ष भर कम मूल्य पर उपलब्ध होने वाली हरी पत्तेदार सब्जियां हमारे शरीर के लिये आवश्यक पौष्टिक तत्वों का भंडार होते हैं। इनमें विटामिन ए, सी, फॉलिक एसिड, राइबोफ्लोविन, थायमिन, बीटा कैरोटिन और लोह तत्व साथ ही कैल्शियम, रेशा और एन्टीऑक्सीडेट पदार्थ पाए जाते हैं। इनमें उपस्थित कैरोटीन शरीर में जाकर विटामिन 'ए' बनाता है।

यदि इन्हें अनाज एवं दालों के साथ मिलाकर खाया जाये तो ये और भी अधिक पौष्टिक हो जाती हैं। इनके द्वारा ग्रामीण समाज में व्याप्त अनेक सूक्ष्म पौष्टिक तत्वों की कमी से होने वाले कुपोषण को सरलता से कम किया जा सकता है। इन हरी पत्तेदार सब्जियों को खाने से हृदय रोग, कब्ज एवं कैंसरों से बचाव किया जा सकता है। साथ इनमें ऊर्जा की मात्रा कम एवं जल की मात्रा अधिक होती है अत: जितना चाहे उपयोग में ले सकते हैं। यह मोटापा कम करने वाले व्यक्तियों के लिए उत्तम होती है। इनमें पानी की अधिक मात्रा होने से काफी तेजी से नष्ट होने की प्रवृत्ति पाई जाती है किंतु इनकी नमी को हटाने के उपाय करके इन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रखा जस सकता है जैसे धूप में, छाया में, विद्युत कैबिनेट आदि के प्रयोग द्वारा

महत्वपूर्ण बिन्दु

- ये उचित विकास एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होती है क्योंकि इनमें सभी आावश्यक तत्व उपस्थित होते हैं।
- यह लौह युक्त है। लौह तत्व की कमी से एनीमिया जैसी बीमारी हो सकती है जो गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं एवं किशोरियों में आम है। इनके प्रतिदिन सेवन से एनीमिया को रोका जा सकता है।
- भारत में हजारों बच्चे जो कि 5 वर्ष से कम आयु वर्ग के हैं, विटामिन 'ए' की कमी से अंधेपन का शिकार हो जाते हैं। इनमें उपस्थित कैरोटीन शरीर में विटामिन 'ए' में परिवर्तन हो जाता है जिससे अंधेपन को रोका जा सकता है।
- हरी पत्तेदार सब्जियां प्रतिदिन व्यस्क महिलाओं हेतु 100 ग्रा., पुरुषों हेतु 40 ग्रा.,46 वर्ष हेतु 50 ग्रा. और 10 वर्ष से अधिक के बालक-बालिकाओं हेतु 50 ग्रा. प्रतिदिन आवश्यक है।
- यह भ्रम है कि इनके उपयोग से अतिसार हो जाता है। यदि इन्हें साफ पानी से धोया जाये जिससे बैक्टीरिया, कीटाणु एवं मिट्टी-पानी आदि निकल जाए तो अतिसार से बचा जा सकता है।
- इनके पोषण को बनाये रखने के लिए अधिक पकाने से परहेज करना। पकाने के बाद निकलने वाले पानी को फेंकना नही चाहिए, ढंक कर पकाना चाहिए, पत्तों को सीधे सूर्य की रोशनी में न सुखायें क्योंकि इससे कैरोटीन नष्ट हो जाता है। पत्तों को अधिक नही भूनना चाहिये।
- इनके पौष्टिक मान को कीमत से न आंके क्योंकि अधिकांश लोग सस्ती वस्तुओं को कम पोषक समझकर सेवन नहीं करते। सस्ती होने के बावजूद ये काफी पौष्टिक होती हैं।
- इन्हें सालभर उपलब्ध होने हेतु किचिन, गार्डन, छत आदि में लगाया जा सकता है।
- व्यंजनों में हरी पत्तेदार सब्जियों के इस्तेमाल पर जोर दिया जाना चाहिए।
- सहजन, तुलसी, कढ़ी पत्ता, धनिया आदि के चूर्ण को बड़ी, पापड़, सूप, मठरी, आदि आटे में मिलाकर इस्तेमाल करना चाहिए। आटे में मिलाकर रोटी, पराठा, पकोड़ा आदि से बिटाकैरोटीन तत्व की पूर्ती होती है जो विटामिन 'ए' की कमी को पूरा करता है।
- यह चूर्ण गर्मी में भी सहायक है, जब गर्मी में इनकी उपलब्धता कम हो।
- इस चूर्ण से सब्जी धोने, साफ करने, काटने आदि से भी बचा जा सकता है।
- बच्चों में भी सब्जी के उपयोग संबंधी जागरूकता लाना चाहिए ताकि खानपान की आदतों में साकारात्मक प्रभाव आयें।

पौष्टिक मान प्रति 100 ग्राम	चौलाई	पालक	सहजन की पत्ती	धनिया पत्ती
कैलोरी	45	26	92	44
प्रोटीन (ग्राम)	4.0	2.0	6.7	3.3
कैल्शियम (मि.ग्रा.)	397	73	440	184
आयरन (मि.ग्रा.)	25.5	10.9	7.0	18.5
कैरोटीन (म्यू.ग्रा.)	5520	5580	6780	6918
थायमिन	0.03	0.03	0.06	0.05
राइबोफ्लेविन	0.30	0.26	0.06	0.06
विटामिन 'सी'	99	28	220	1135

उपयोग का तरीका

ताजी हरे पत्तेदार सब्जियों में अधिक मात्रा में पोषकों का समावेश पाया जाता है। इसलिए इन्हें यथासंभव ताजी अवस्था में ही खाना उचित होता है। इन्हें काटने के पूर्व ही अच्छी तरह से 2-3 बार स्वच्छ जल से धो लेना चाहिए जिससे मिट्टी एवं कीटनाशक निकल जायें। हरी सब्जियों को कभी भी काट कर नहीं धोना चाहिए और न ही बहुत अधिक समय तक काट कर रखना चाहिए। ऐसा करने से उनके पाये जाने वाले खनिज लवण एवं विटामिन जल में घुलनशील होने के कारण नष्ट हो जाते हैं। इन्हें कम से कम पानी में ढंककर पकाना चाहिए।

- चपाती, पराठा, पूड़ी आदि बनाते समय इन्हें काटकर मिलायें या थोड़े पानी में उबालकर पीसकर इस मिश्रण से आंटा गूंथे।
- खिचड़ी, दाल आदि में मिलाकर बनायें।
- मूली, चुकन्दर आदि के पत्तों को भी न फेंके। इन्हें अन्य भाजियों के साथ या अकेले भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- इन्हें चटनी, रायता आदि में इस्तेमाल करें।
- जब यह कम मूल्य पर प्राप्त हो तो थोक में खरीद कर धोकर सुखाया जा सकता है। सूखने के पश्चात हाथों से रगड़कर चूरा बनाकर एयरटाइट डिब्बों में रखा जा सकता है एवं जब यह उपलब्ध न हो तो उपयोग में सूखी भाजी को लाया जा सकता है।

हरी पत्तेदार सब्जियों में पाये जाने वाले पोषक तत्व

यह प्रमाणित किया जा चुका है कि अधिक मात्रा में हरी सब्जियां खाने से विशिष्ट प्रकार के कैंसरों तथा हृदय रोगों का जोखिम कम हो जाता है। पौष्टिक तत्वों से भरपूर होने के कारण संतुलित आहार में खाद्य पदार्थों के बीच अपना एक महत्वपूर्ण तथा अलग ही स्थान रखती है।

आंखों के लिए सर्वोत्तम

विटामिन ए : सामान्यत: विटामिन ए दृष्टि के लिये आवश्यक होता है। भारत में पोषण जनित अपर्याप्त रोगों में विटामिन ए की कमी प्रमुख समस्या है। इससे 5 वर्ष तक की आयु के बच्चे अधिक प्रभावित होते हैं। गहरे हरे रंग की पत्तियों में विटामिन ए बीटा-कैरोटिन के रूप में पाया जाता है। बच्चों के आहार में 30-40 ग्रा. हरी पत्तेदार सब्जियों को सम्मिलित करने पर उनकी विटामिन ए की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है।

घाव भरने एवं लौह तत्व के अवशोषण में सहायक

विटामिन सी : घावों को भरने एवं लौह तत्व के अवषोशण को बढ़ाने के लिए इस विटामिन की आवश्यकता होती है। इसकी कमी से स्कर्वी एवं रक्त स्त्रावी मसूड़ों के रूप में देखी जाती है। लोहे के फेरिक रूप को फैरस रूप में परिवर्तित करने के लिये यह आवश्यक होता है। जिससे कि वह आंतों के द्वारा शीघ्र अवशोषित हो जाता है। यह अस्थियों के निर्माण में भी सहायक होता है। यह संक्रमण प्रतिरोध के लिए आवश्यक होता है। साधारण सर्दी-जुकाम की रोकथाम में भी एस्कर्बिक अम्ल की आवश्यकता होती है।

वनस्पतियों पर आधारित खाद-पदार्थ मुख्यत: खट्टे रसीले फल एवं शाक-सब्जियां जैसे चौलाई, सरसों, सहजन की पत्तियां, विटामिन सी के प्रचुर स्त्रोत हैं। इन्हें अल्पमात्रा में ही खाते रहने से इनकी पूर्ति सरलता से की जा सकती है।

एंग्यूलर स्टेमेटाइटिस दूर करने में सहायक

राइबोफ्लेविन : शरीर में राइबोफ्लेविन की कमी होना अराइफ्लेविनोसिस कहलाता है। अधिक समय तक राइबोफ्लेविन की कमी होने पर ओठों के किनारों की त्वचा फटने लगती है। मुंह के अंदर घाव व दाने हो जाते हैं। जीभ व ओंठ बैंगनी लाल हो जाते हैं। नाक के मोड़ पर कानों में दाने व दरार पड़ जाती है। हरी पत्तेदार सब्जियां इसका स्त्रोत होती हैं। अत: इन्हें नियमित लेने से इस समस्या का निराकरण होता है।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

(पृष्ठ 5 का शेष)

मूंग उत्पादन की उन्नत.....

शाकनाशी रसायन का नाम	मात्रा (ग्रा. सक्रिय पदार्थ/हे.)	प्रयोग का समय	नियंत्रित खरपतवार
पेन्डिमिथिलीन (स्टाम्प एक्स्ट्रा)	700 ग्रा.	बुवाई के 0-3 दिन तक	घासकुल एवं कुछ चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार
इमेजेथापायर (परस्यूट)	100 ग्रा.	बुवाई के 20 दिन तक	घासकुल, मोथाकुल एवं चौडी पत्ती वाले खरपतवार
क्यूजालोफाप ईथाइल (टरगासुपर)	40-50 ग्रा.	बुबाई के 15-20दिन तक	घासकुल के खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण

खरपतवार नाशक दवाओं के छिड़काव के लिये हमेशा फ्लैट फेन नोजल का ही उपयोग करें।

कीट नियंत्रण : मूंग की फसल में प्रमुख रूप से फली भृंग, हरा फुदका, माहू, तथा कम्बल कीट का प्रकोप होता है। पत्ती भक्षक कीटों के नियंत्रण हेतु क्विनालफास की 1.5 लीटर या मोनोक्रोटोफॉस की 750 मि.ली. तथा हरा फुदका, माहू एवं सफेद मक्खी जैसे रस चूसक कीटों के लिए डायमिथोएट 1000 मि.ली. प्रति 600 लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. प्रति 600 लीटर पानी में 125 मि.ली. दवा के हिसाब से प्रति हेक्टेयर छिड़काव करना लाभप्रद रहता है।

जब फलियां काली पड़कर पकने लगे तब तुड़ाई करना चाहिये। इन फलियों को सुखाकर बैलों के दावन से या लकड़ी द्वारा पीटकर गहाई करें।

रोग नियंत्रण: मूंग में अधिकतर पीत रोग, पर्णदाग तथा भभूतिया रोग प्रमुखतया आते हैं। इन रोगों की रोकथाम हेतु रोग निरोधक किस्में हम 1, पंत मूंग 1, पंतमूंग 2, टी.जे.एम -3, जे.एम. 721 आदि का उपयोग करना चाहिये। पीत रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसके नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक्स 25 ईसी 750 से 1000 मि.ली. का 600लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर छिड़काव 2 बार 15 दिन के अंतराल पर करें। फफूंद जनित पर्णदाग (अल्टरनेरिया/ सरकोस्पोरा/ माइरोथीसियस) रोगों के नियंत्रण हेतु डायइथेन एम. 45, 2.5 ग्रा/लीटर या कार्बेन्डाजिम+डायइथेन एम. 45 की मिश्रित दवा बना कर 2.0 ग्राम/लीटर पानी में घोल कर वर्षा के दिनों को छोड़कर खुले मौसम में छिड़काव करें। आवश्यकतानुरूप छिड़काव 12-15 दिनों बाद पुन: करें।

मूंग के प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

रोग	नियंत्रण
पीला चितकबरी (मोजेक) रोग	▶ रोग प्रतिरोधी अथवा सहनशील किस्मों जैसे टी.जे.एम. -3, के -851, पन्त मूंग -2, पूसा विशाल, एच.यू.एम. -1 का चयन करें। ▶ प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजो का प्रयोग करें। ▶ बीज की बुवाई जुलाई के प्रथम सप्ताह तक कतारों में करें प्रारम्भिक अवस्था में रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। ▶ यह रोग विषाणु जनित है जिसका वाहक सफेद मक्खी कीट है जिसे नियंत्रित करने के लिये ट्रायजोफॉस 40 ईसी, 2 मिली प्रति लीटर अथवा थायोमेथोक्साम 25 डब्लू.जी. 2 ग्राम/ली. या डायमेथोएट 30 ईसी, 1 मिली./ली. पानी में घोल बनाकर 2 या 3 बार 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।
सर्कोस्पोरा पर्णदाग	▶ रोग रहित स्वस्थ बीजों का प्रयोग करें। ▶ खेत में पौधे घने नहीं होने चाहिये। पौधों का 10 सेमी की दूरी के हिसाब से विरलीकरण करें। ▶ रोग के लक्षण दिखाई देने पर मेन्कोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.5 ग्राम लीटर या कार्बेन्डाइजिम 50 डब्लू.पी. की 1 ग्राम/ली. दवा का घोल बनाकर 2-3 बार छिड़काव करें।
एन्थ्राक्नोज	▶ प्रमाणित एवं स्वस्थ बीजो का चयन करें। ▶ फफूंदनाशक दवा जैसे मेन्कोजेब 75 डब्लू.पी. 2.5 ग्राम/ली. या कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. की 1ग्राम/ली. का छिड़काव बुवाई के 40 एवं 55 दिन पश्चात करें।
चारकोल विगलन	▶ बीजापचार कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.जी. 1 ग्राम प्रति किग्रा बीज के हिसाब से करें। ▶ 2-3 वर्ष का फसल चक्र अपनाये तथा फसल चक्र में ज्वार, बाजरा फसलो को सम्मिलित करें।
भभूतिया (पावडरी मिल्डयू) रोग	▶ रोग प्रतिरोधी किस्मो का चयन करें। ▶ समय से बुबाई करें। ▶ रोग के लक्षण दिखाई देने पर कैराथन या सल्फर पाउडर 2.5 ग्राम/ली. पानी की दर से छिड़काव करें।

फसल पद्धति : मूंग कम अवधि में तैयार होने वाली दलहनी फसल है जिसे फसल चक्र में सम्मलित करना लाभदायक रहता है। मक्का-आलू-गेहूँ -मूंग (बसंत), ज्वार+मूंग-गेहूँ, अरहर+मूंग-गेहूँ, मक्का +मूंग-गेहूँ, मूंग-गेहूँ। अरहर की दो कतारों के बीच मूंग की दो कतारें अन्त: फसल के रूप में बोना चाहिये। गन्ने के साथ भी इनकी अन्तरवर्तीय खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।

कटाई एवं गहाई: मूंग की फसल क्रमश: 65-70 दिन में पक जाती है। अर्थात जुलाई में बोई गई फसल सितम्बर तथा अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक कट जाती है। फरवरी-मार्च में बोई गई फसल मई में तैयार हो जाती है। फलियां पककर हल्के भूरे रंग की अथवा काली होने पर कटाई योग्य हो जाती है। पौधे में फलियां असमान रूप से पकती हैं यदि पौधे की सभी फलियों के पकने की प्रतीक्षा की जाये तो ज्यादा पकी हुई फलियां चटकने लगती है अत: फलियों की तुड़ाई हरे रंग से काला रंग होते ही 2-3 बार में करें एवं बाद में फसल को पौधें के साथ काट लें। अपरिपक्व अवस्था में फलियों की कटाई करने से दानों की उपज एवं गुणवत्ता दोनों खराब हो जाते हैं। हंसिए से काटकर खेत में एक दिन सुखाने के उपरान्त खलियान में लाकर सुखाते हैं। सुखाने के उपरान्त डंडे से पीट कर या बैंलो को चलाकर दाना अलग कर लेते हैं वर्तमान में मूंग एवं उड़द की थ्रेसिंग हेतु थ्रेसर का उपयोग कर गहाई कार्य किया जा सकता है।

उपज एवं भडारण: मूंग की खेती उन्नत तरीके से करने पर 8-10 क्विंटल/हे. औसत उपज प्राप्त की जा सकती है। मिश्रित फसल में 3-5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है। भण्डारण करने से पूर्व दानों को अच्छी तरह धूप में सुखाने के उपरान्त ही जब उसमें नमी की मात्रा 8-10 प्रतिशत रहे तभी वह भण्डारण के योग्य रहती है।

मूंग का अधिक उत्पादन लेने के लिए आवश्यक बातें

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग करें।
- सही समय पर बुवाई करें, देर से बुवाई करने पर उपज कम हो जाती है।
- किस्मों का चयन क्षेत्रीय अनुकूलता के अनुसार करें।
- बीजोपचार अवश्य करें जिससे पौधों को बीज एवं मृदा जनित बीमारियों से प्रारंभिक अवस्था में प्रभावित होने से बचाया जा सके।
- मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग करें जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है जो टिकाऊ उत्पादन के लिए जरूरी है।
- खरीफ मौसम में मेड़ नाली पद्धति से बुबाई करें।
- समय पर खरपतवार नियंत्रण एवं पौध संरक्षण करें जिससे रोग एवं बीमारियों का समय पर नियंत्रण किया जा सके।

(पृष्ठ 11 का शेष)

हरी पत्तेदार सब्जियों ....

रक्त अल्पता दूर करने में सहायक

फॉलिक एसिड : फॉलिक एसिड की कमी से महिलाओं में मिगैलोब्लास्टिक रक्त अल्पता देखी जाती है। किशोरी, धात्री एवं गर्भवती महिलाओं में अधिक कमी देखी जा सकती है।

लौह तत्व : लौह तत्व रक्त का एक महत्वपूर्ण घटक है। एक सामान्य प्रौढ़ व्यक्ति के शरीर में 4-5 ग्राम लोहा उपस्थित रहता है। यह हीमोग्लोबिन के निर्माण एवं विभिन्न प्रकार के विकास के लिए आवश्यक होता है।

भारत में गर्भवती महिला, किशोरियों एवं छोटे बच्चों में रक्त अल्पता के लक्षण स्पस्ट दिखाई देते हैं। यदि शरीर में 5-9 ग्राम/ 100 एम. एल. हीमोग्लोबिन का प्रतिशत हो जाये तो शरीर की त्वचा पीली पड़ना, थकावट, सॉस लेने में परेशानी, चक्कर आना, भूख कम हो जाना आदि लक्षण प्रकट होने लगते हैं। 88 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं में एनीमिया की व्यापकता है, वहीं 6-24 माह के 74 प्रतिशत बच्चे इससे पीड़ित हैं। शाकाहारी व्यक्तियों के लिए गहरे हरे रंग की पत्तेदार सब्जियां जैसे चौलाई, पुदीना, हरा धनिया, मूली की पत्तियां, पालक आदि लौह तत्व के उत्तम स्त्रोत होते हैं।

रक्त का थक्का बनाने में आवश्यक

विटामिन के : यह शरीर के बाहर रक्त का थक्का बनाने के लिये आवश्यक होता है। इसकी कमी से हीमोरेजिक बीमारी देखी जाती है जिसमें रक्त का स्त्राव ज्यादा देखा जाता है। बाहरी या आंतरिक चोट लगने पर रक्त का बहना रुकता नहीं है क्योंकि रक्त थक्के के रूप में जमकर मार्ग अवद्ध नहीं कर पाता है। गहरे रंग की ताजी हरी पत्तियों में यह प्रचुरता से पाया जाता है।

हड्डियों की वृद्धि एवं विकास के लिए आवश्यक

कैल्शियम : हड्डियों की वृद्धि एवं विकास के लिए कैल्शियम आवश्यक होता है। इसकी कमी से अस्थि संबंधित बीमारी देखी जाती है। दूध में कैल्शियम पाया जाता है किंतु हर वर्ग का व्यक्ति इसे प्राप्त नहीं कर पाता। विशिष्ट अवस्था जैसे गर्भावस्था, धात्रीवस्था में इसकी आवश्यकता बढ़ जाती है। हरी पत्तेदार सब्जियां इसका प्रचुर स्त्रोत होती हैं। अत: आहार में इनका समावेश किया जाना चाहिए।

हृदय को स्वस्थ रखने में सहायक

पोटेशियम : यह मांसपेशियों के संकुचन में, हृदय को स्वस्थ रखने में, नाड़ी उतकों की संवेदना शक्ति को बनाये रखने में तथा पानी के संतुलन में सहायक होता है। हरी पत्तेदार सब्जियां पोटेशियम के उत्तम स्त्रोत है। सामान्य रूप से इन्हें खाने से पोटेषिशम की कमी पूर्ण हो जाती है।

मैग्नीशियम : इस तत्व की हीनता मनुष्यों में अधिक समय तक डायरिया रहने के कारण होती है। अधिक एल्कोहल लेने वाले व्यक्ति के रक्त में भी मैग्नीशियम की कमी हो जाती है। इसकी कमी से टिटेनि जैसे लक्षण होने लगते हैं। मांसपेशियां बहुत कांपने लगती हैं, हाथ-पॉव में ऐंठन हो जाती है। हरी पत्ती वाली सब्जियों में यह पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

आहारीय रेशे का प्रमुख स्त्रोत

आहारीय रेशे : आहारीय रेशे को हमारे शरीर में नहीं पचाया जा सकता किंतु इसकी उपयोगिता सिद्ध की जा चुकी है। यह घुलनशील एवं अघुलनशील दोनों ही रूपों में पाया जाता है। प्रतिदिन कम से कम 40 ग्राम आहारीय रेशा हमें आहार में सम्मिलित करना चाहिए या प्रति 1000 कैलोरी पर 25 ग्राम आहारीय रेशे की संस्तुति की गई है। हरी पत्तेदार सब्जियां इसके उत्तम स्त्रोत होते हैं।

यह मल की मात्रा को बढ़ाते हैं एवं कब्ज की शिकायत से निजात दिलाते हैं। कोलन के कैंसर से बचाते एवं मधुमेह के रोगी के शरीर में रक्त शर्करा को शीघ्रता से बढ़ने नहीं देते। अत: समझदारी इसी में है कि हमें हरी पत्तेदार सब्जियों को प्रतिदिन अपने आहार में सम्मिलित करना चाहिए ताकि दूरगामी दुष्परिणामों से बचा जा सके।

(पष्ठ 7 का शेष)

भिंडी फसल की उन्नत कृषि...

बीज और बीजोपचार: भिंडी की बुवाई के लिए 1 हेक्टेयर खेत में करीब 18 से 20 किग्रा बीज की जरूरत पड़ती है। ध्यान दें कि इसके बीजों को बोने से पहले करीब पानी में 24 घंटे तक डुबाकर रखें। इस तरह बीजों का अंकुरण अच्छा होता है। इसके अलावा बीजों को थायरम या कार्बेन्डाजिम से भी उपचारित कर सकते हैं। बुवाई के पूर्व भिंडी के बीजों को 3 ग्राम मेन्कोजेब या कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

बीज की मात्रा व बुआई का तरीका: सिंचित अवस्था में 2.5 से 3 किग्रा तथा असिंचित दशा में 5-7 किग्रा प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। संकर किस्मों के लिए 5 किग्रा प्रति हेक्टर की बीज दर पर्याप्त होती है। भिंडी के बीज सीधे खेत में ही बोये जाते हैं। बीज बोने से पहले खेत को तैयार करने के लिये 2-3 बार जुताई करनी चाहिए। वर्षाकालीन भिंडी के लिए कतार से कतार की दूरी 40-45 सेंमी एवं कतारों में पौधे की बीच 25-30 सेंमी का अंतर रखना उचित रहता है। ग्रीष्मकालीन भिंडी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 25-30 सेंमी एवं कतार में पौधे से पौधे के मध्य दूरी 15-20 सेमी रखनी चाहिए। बीज की 2 से 3 सेमी गहरी बुवाई करनी चाहिए। पूरे खेत को उचित आकार की पट्टियों में बांट लें जिससे कि सिंचाई करने में सुविधा हो। वर्षा ऋतु में जल भराव से बचाव हेतु उठी हुई क्यारियों में भिण्डी की बुवाई करना उचित रहता है।

खाद और उर्वरक: भिंडी की फसल में अच्छा उत्पादन लेने हेतु प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 15-20 टन गोबर की खाद एवं नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की क्रमश: 80 किग्रा, 60 किग्रा एवं 60 किग्रा प्रति हेक्टर की दर से मिट्टी में देना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के पूर्व भूमि में देना चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा को दो भागों में 30-40 दिनों के अंतराल पर देना चाहिए।

सिंचाई: गर्मियों में भिंडी फसल की सिंचाई 5 से 7 दिन के अंतराल पर करते रहना चाहिए। अगर खेत में नमी न हो तो फसल की बुवाई से पहले भी एक सिंचाई कर सकते हैं।

खरपतवार नियंत्रण: भिंडी के खेत को खरपतवारमुक्त रखना है तो फसल की बुवाई के करीब 15 से 20 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई कर देना चाहिए। बता दें कि भिंडी के खेत में खरपतवार नियंत्रण के लिए रासायनो का भी प्रयोग कर सकते हैं।

कीट एवं उनका नियंत्रण

रस चूसक कीट (हरा तेला, माहू एवं सफेद मक्खी): रस चूसक कीट पौधे के कोमल भागो जैसे पत्तियों और तने से रस चूस लेते हैं जिस कारण पौधे कमजोर हो जाते हैं और पौधे की बढ़वार रूक जाती है। रस चूसक कीट के नियंत्रण के लिए नीम तेल 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए येलो स्टिकी ट्रेप 15 ट्रैप प्रति एकड़ का प्रयोग करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए वर्टिसिलियम लेकानी 2.5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। रासायनिक नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. 0.5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या फ्लोनिकामाइड 50 एस.जी. 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

प्ररोह एवं फल छेदक: भिंडी का यह कीट सबसे ज्यादा वर्षा ऋतु में नुकसान पहुंचाता है। शुरूआती अवस्था में इल्ली कोमल तने में छेद करके खा जाती है और जिससे तना सूख जाता है। यदि फूलों की अवस्था पर आक्रमण होने पर फल लगने के पहले ही फूल गिर जाता है। जब फल अवस्था में यह इल्ली प्रकोप करती है तो फलों में छेदकर गूदे को खा जाती है। प्ररोह एवं फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए नीम तेल 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करे। प्ररोह एवं फल छेदक कीट का निवारक नियंत्रण के लिए फेरोमोन ट्रैप 5 प्रति एकड़ में इनस्टॉल करें। प्ररोह एवं फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एस.जी. को 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। प्ररोह एवं फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल 18.5 एस.सी. को 0,4 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

रोग एवं उनका नियंत्रण

आर्द्रगलन: इस रोग का प्रकोप भिंडी पर पर दो तरह से होता है। पहला पौधे का जमीन में बाहर निकलने से पहले एवं दूसरा जमीन की सतह पर स्थित तने का भाग काला पड़कर गिर जाता है और बाद में पौधा सूख जाता है। यदि वातावरण में अधिक आर्द्रता होती है तो यह रोग ज्यादा बढ़ता है, इसलिए फसल का सही समय पर उपचार करते रहना चाहिए। आर्द्रगलन के निवारक के लिए भिंडी की फसल में बहुत ज्यादा सिंचाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे आर्द्रता बढ़ती है। जल जमाव का उचित प्रबंध करना चाहिए। भिंडी के बीज का उपचार ट्राइकोडर्मा विरडी 4 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से करना चाहिए। मिट्टी में ट्राइकोडर्मा विरडी का 2 लीटर प्रति एकड़ 200 पानी में मिलाकर मिट्टी को भिगोना चाहिए। रासायनिक उपचार के लिए कार्बेन्डेजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. को 500 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर ड्रेंचिंग करे। अगर ज्यादा समस्या हो तो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डबल्यू.पी. को 500 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव/ड्रेंचिंग करें।

पाउडरी मिल्ड्यू: भिंडी की फसल में इस रोग के कारण पत्तियों या तने पर सफेद चूर्णी लिए हुए धब्बे दिखाई देते हैं। ज्यादा प्रभावित पौधे की पत्तियां पीली पड़कर गिर जाती है। इस रोग की समस्या सबसे पहले पुरानी पत्तियों पर अधिक देखने को मिलती है। रोग का निवारक के लिए भिंडी की फसल में पाउडरी मिल्ड्यू रोग के नियंत्रण के बैसिलस सबटिलिस 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। रासायनिक उपचार में हेक्साकोनोजोल 5 प्रतिशत ईसी की 1.5 मिली मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। अगर ज्यादा समस्या हो तो एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2 प्रतिशत और डिफेनोकोनाजोल 11.4 प्रतिशत एस.सी. 200 मिली प्रति एकड़ (200 लीटर पानी को 500 ग्राम प्रति एकड़)के हिसाब से 150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करे।

भिंडी का पीला शिरा मोजेक रोग: भिंडी में इस रोग से पत्तियों की शिराएं पीली व चितकबरी और प्यालेनुमा दिखाई देने लगती हैं और फल भी छोटे और कम लगते हैं। भिंडी की फसल में खतरनाक बीमारी विषाणु द्वारा फैलता है तथा यह रोग सफेद मक्खी कीट के द्वारा फैलाया जाता है। इस रोग के नियंत्रण के लिए भिंडी की रोधी प्रजाति किस्मों का चयन करें। रोग के लक्षण दिखाई देते ही रोगग्रसित पौधों को खेत से बाहर कर दें। बीज का शोधन फफूंदीनाशक कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के साथ तथा किसी कीटनाशी जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. 0.5 मिली प्रति किलोग्राम बीज में मिला कर करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम के लिए येलो स्टिकी ट्रेप 15 ट्रैप प्रति एकड़ का प्रयोग करना चाहिए। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. की 1.5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. 0.5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

तोड़ाई और उपज: भिंडी के फलों की तुड़ाई उसकी किस्म पर निर्भर होती है। वैसे इसकी तुड़ाई करीब 45 से 60 दिनों में शुरू कर देनी चाहिए। ध्यान दें कि तुड़ाई 4 से 5 दिनों के अंतराल पर रोजाना तुड़ाई करें।

उपज: अगर किसान भिंडी की खेती उन्नत किस्मों और अच्छी देखभाल के साथ की जाएए तो इससे प्रति हेक्टेयर करीब 60 से 70 क्विंटल उपज प्राप्त हो जाती है।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078

गाडरवारा में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री गोपाल प्रसाद गुप्ता
मे. : जी.एम. मेडिकल स्टोर
राधा वल्लभ चौक,
गाडरवारा
जिला-नरसिंहपुर

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

● औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद ● गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध। **वितरक** - ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

अर्जुन इण्डस्ट्रीज
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
● ट्राली ● टेंकर ● कल्टीवेटर ● बोनी मशीन ● पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

विद्युत कम्पनी के अधिकारियों की निगरानी में हो रही नहरों से फसलों की सिंचाई

नहरों से सिंचाई के लिये विद्युत कम्पनी के अधिकारी तैनात

हरदा। ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल की सिंचाई के लिये इन दिनों नहरों के माध्यम से जल प्रदाय किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान यह देखा गया है कि नहरों के आसपास के किसान विद्युत मोटर लगाकर नहरों से पानी लिफ्ट कर खेतों में सिंचाई कर रहे हैं, जिसके कारण विद्युत की ओवरलोडिंग हो रही है। कलेक्टर आदित्य सिंह ने विद्युत वितरण कम्पनी और जल संसाधन विभाग के अधिकारी कर्मचारियों के दल बनाकर निरीक्षण की व्यवस्था लागू की है। अब ये अधिकारी-कर्मचारी अपने-अपने क्षेत्र में लगातार भ्रमण कर यह सुनिश्चित करेंगे कि जो किसान विद्युत मोटर के माध्यम से खेतों में सिंचाई कर रहे हैं, उन्होने बिजली का विधिवत कनेक्शन लिया है कि नहीं। इसके अलावा ऐलान अनुसार खेतों में सिंचाई हो रही है कि नहीं, निरीक्षण के दौरान यह भी चैक किया जाएगा।

जारी आदेश के अनुसार हरदा उपनहर अनुविभाग टिमरनी की बारजा, सामरधा व धौलपुर उपनहर के लिये उपयंत्री जल संसाधन विभाग मधुवन उरमालिया, अमीन रामभुवन पटेल, चौकीदार मदन, कनिष्ठ यंत्री जितेन्द्र सिंह राजपूत व लाइनमेन सतीश चौधरी की ड्यूटी लगाई गई है। इसी प्रकार चारखेड़ा उपनहर के लिये उपयंत्री जल संसाधन मधुवन उरमालिया, अमीन रामभुवन पटेल, चौकीदार मदन, कनिष्ठ यंत्री जितेन्द्र सिंह राजपूत व लाइनमेन सोहन की ड्यूटी लगाई गई है। छिदगांव व बगवाड़ उपनहर के लिये उपयंत्री जल संसाधन मधुवन उरमालिया, अमीन ए.के. गुहा, चौकीदार मदन, कनिष्ठ यंत्री जितेन्द्र सिंह राजपूत व लाइनमेन सोहन की ड्यूटी लगाई गई है। इसके अलावा अन्य नहरों में विद्युत व सिंचाई संबंधी मॉनिटरिंग हेतु भी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है।

कपास उत्पादन में पौधरोपण तकनीक एवं विपणन पर कार्यशाला

खण्डवा। खंडवा जिले में कपास उत्पादन में वृद्धि के लिये उच्च घनत्व पौधरोपण तकनीक एवं विपणन पर कार्यशाला का आयोजन कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कलेक्टर अनूप कुमार सिंह द्वारा की गई। कार्यशाला में डॉ. डी.के. श्रीवास्तव के द्वारा जिले के प्रगतिशील कृषकों, जिनिंग मिल व्यवसायी, एफपीओ, एनजीओ, स्वयं सहायता समूह के प्रतिनिधियों एवं कृषि विस्तार अधिकारियों के समक्ष उच्च घनत्व पौधरोपण तकनीक एवं विपणन से संबंधित तकनीकी जानकारी पावर पॉइंट्स के माध्यम से दी। इस दौरान उन्होंने बताया कि परम्परागत रूप से की जा रही खेती में कपास फसल को कतार से कतार की दूरी 90 से 100 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 60 से.मी. रखी जाती है, जिसमें पौधों की संख्या 10 हजार से 20370 पौधे प्रति हेक्टेयर आती है। उन्होंने बताया कि उच्च घनत्व पौधरोपण तकनीक में कतार से कतार की दूरी 90 से.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 से 15 से.मी. रखी जाती है, जिसमें पौधों की संख्या लगभग 75,925 से 1,12,962 पौधे प्रति हेक्टेयर आती है, जिसमें परम्परागत रूप से की जाने वाली खेती की तुलना में उच्च घनत्व पौधरोपण तकनीक से 25 से 30 प्रतिशत अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। इसके बाद कार्यशाला में उपस्थित कृषकों एवं अन्य सदस्यों द्वारा तकनीक से संबंधित प्रश्नों के जवाब कृषि वैज्ञानिक डॉ. डी.के. श्रीवास्तव द्वारा दिए गए।

संयुक्त संचालक संचालनालय किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग जी.एस. चौहान द्वारा कार्यशाला में उपस्थित कृषकों को जैविक कपास तकनीक से कपास उत्पादन करने वाले कृषकों को जैविक प्रमाणीकरण हेतु लगने वाले शुल्क में 80 प्रतिशत छूट की सुविधा तथा लागत 3 वर्ष तक जैविक कपास उत्पादन करने वाले कृषकों को 2000 रुपये प्रति हेक्टेयर प्रति वर्ष विभाग के माध्यम से सुविधा दिलाये जाने का आश्वासन दिया गया। कलेक्टर श्री सिंह ने जिले में कपास उत्पादन में वृद्धि के लिये आवश्यक कदम उठाये जाने एवं जैविक उत्पाद का विभागीय अमले द्वारा कृषकों में प्रचार-प्रसार कराये जाने के निर्देश उप संचालक कृषि को दिए। कार्यशाला में अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय खंडवा डॉ. डी.एच. रनाडे, संयुक्त संचालक संचालनालय किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग जी.एस. चौहान, संयुक्त संचालक इंदौर आलोक कुमार मीणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. डी.के. वाणी, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. डी.के. श्रीवास्तव, उप संचालक कृषि, परियोजना संचालक आत्मा उपस्थित थे।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org
कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

कृषक दूत
मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म
कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम....................................
संस्था का नाम....................................
पूरा पता....................................
ग्राम....................पोस्ट....................तहसील....................
जिला....................राज्य....................पिन कोड
दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र '' कृषक दूत '' की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).................... (शब्दों में)....................
बैंक का नाम.................... ड्राफ्ट चेक क्रमांक....................
दिनांक.................... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान.................... प्रतिनिधि का नाम एवं हस्ताक्षर हस्ताक्षर सदस्य एवं संस्था सील
दिनांक....................

किसान गेहूं की नरवाई न जलायें, बल्कि खेत में मिलाकर खाद बनायें

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी.एस. किरार, वैज्ञानिक डॉ. आर.के. प्रजापति, डॉ. एस.के. सिंह, डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. एस.के. जाटव, डॉ. आई.डी. सिंह एवं हंसनाथ खान द्वारा किसानों को गेहूं की नरवाई जलाने से भूमि एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्परिणामों के बारे में समसमायिकी सलाह दी गयी। गेहूं की फसल काटने के पश्चात् जो तने के अवशेष अर्थात् नरवाई होती है, किसान भाई उसमें आग लगाकर उसे नष्ट कर देते हैं। नरवाई में लगभग नत्रजन 0.5 प्रतिशत, स्फुर 0.6 प्रतिशत और पोटाश 0.8 प्रतिशत पाया जाता है, जो नरवाई में जलकर नष्ट हो जाता है और गेहूं फसल में दाने से डेढ़ गुना भूसा होता है। अर्थात् यदि एक हेक्टेयर में 40 क्विंटल गेहूँ का उत्पादन होगा तो भूसे की मात्रा 60 क्विंटल होगी। उस भूसे से 30 किलो नत्रजन, 36 किलो स्फुर, 48 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर प्राप्त होगा, जो वर्तमान मूल्य के आधार पर लगभग रुपये 3000 का होगा जो जलकर नष्ट हो जाता है। इसके साथ ही भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है अर्थात् भूमि में उपस्थित सूक्ष्म जीव एवं केंचुआ आदि जलकर नष्ट हो जाते हैं। इनके नष्ट होने से खेत की उर्वरता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। भूमि की ऊपरी पर्त में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्व आग लगने के कारण जलकर नष्ट हो जाते हैं साथ ही भूमि की भौतिक दशा भी खराब हो जाती है अर्थात् भूमि कठोर हो जाती हैए जिसके कारण भूमि की जल धारण क्षमता कम हो जाती है। फलस्वरूप फसलें जल्द सूखती हैं और कमजोर हो जाती हैं तथा भूमि में होने वाली रासायनिक क्रियायें भी प्रभावित होती हैं। जैसे कार्बन-नाइट्रोजन एवं कार्बन-फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है, जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। गेहूँ की नरवाई में आग लगाने से जनधन की हानि तथा पेड़-पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं जबकि नरवाई न जलाने से फसल अवशेषों का पशु चारा, वर्मी-कम्पोस्ट, मशरूम उत्पादन, मल्चिंग आदि के लिए उपयोग किया जा सकता है। वैज्ञानिक शोधों के आधार पर ये ज्ञात हुआ है कि एक हेक्टेयर भूमि में फसल अवशेष जैसे गेहूं-धान को जलाने से पर्यावरण में कार्बन डाईऑक्साइड 9.3 टन, अमोनिया 1.0 टन, नाईट्रस ऑक्साइड 1.5 टन एवं अन्य जहरीली गैसें उत्पन्न होती हैं जो पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं तथा मनुष्य एवं पशुओं में घातक बीमारियों को पैदा करती हैं। फसल अवशेषों को मृदा में गहरी जुताई करके मिला देने से रोग, कीट और खरपतवारों में कमी होती है, उससे प्रति हेक्टेयर रुपये 2500 की बचत होती है तथा दलहनी फसल अवशेषों से बनाये गये कम्पोस्ट में नत्रजन 1.8 प्रतिशत, फास्फोरस 3.4 प्रतिशत तथा पोटाश 0.4 प्रतिशत तक अधिक पाया जाता है। बायो-डीकम्पोजर का उपयोग फसल अवशेषों को शीघ्र सड़ाकर कम्पोस्ट खाद तैयार करने में किया जा सकता है। एक शीशी बायो-डीकम्पोजर/बायो-डाईजेस्टर 150 मिली को एक प्लास्टिक ड्रम में दो किलो गुड़ के साथ 200 लीटर पानी में डालकर 7 दिन तक डंडे से हिलाते रहना चाहिए फिर इसका उपयोग किया जा सकता है तथा उपयोग करते समय खेत नमीयुक्त होना चाहिए। आधुनिक मशीनों के उपयोग से फसल अवशेषों के होते हुए भी दूसरी फसलों की खेती संभव है तथा फसल अवशेषों को मृदा में अच्छी तरह से मिलाया जा सकता है, जो बाद में सड़कर पौषक तत्व प्रदान करते हैं।

उपार्जित गेहूं के सुरक्षित भण्डारण की व्यवस्था करें : श्रीमती पाल

रीवा। जिले भर में 103 खरीदी केन्द्रों में समर्थन मूल्य पर पंजीकृत किसानों से गेहूं का उपार्जन किया जा रहा है। अभी केवल दो खरीदी केन्द्रों में गेहूं की आवक हुई है। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने कहा है कि असमय वर्षा से उपार्जित गेहूं को हानि हो सकती है। सभी समिति प्रबंधक तथा उपार्जन केन्द्र प्रभारी उपार्जित गेहूं के सुरक्षित भण्डारण की व्यवस्था करें।

अभी बहुत कम मात्रा में गेहूं की आवक हुई है। खरीदी केन्द्र में प्राप्त गेहूं का उठाव करके सुरक्षित भण्डारण कराएं जिससे गेहूं को असमय वर्षा से बचाया जा सके। अधिक मात्रा में गेहूं की आवक होने पर उसे उपार्जन के बाद स्टेग (छल्ली लगाकर) उपार्जन केन्द्र में रखें। वर्षा से बचाने के लिए वाटर प्रूफ तिरपाल से उसे ढकने की व्यवस्था करें। जिन किसानों ने स्लॉट बुक किया है उनके गेहूं का उपार्जन करके उसी दिन उसे परिवहन कराकर गोदाम में सुरक्षित भण्डारण कराएं। उपार्जन केन्द्रों पर गेहूं की तौल के बाद बारदानों की सिलाई कराकर ऊंचे पक्के स्थानों पर स्टेगिंग कराएं। गेहूं हर हाल में बोरियों में भरकर रखवाएं। उपार्जन केन्द्र में जल निकासी की समुचित व्यवस्था करें जिससे अधिक वर्षा की स्थिति में किसी तरह का जल भराव न हो। सभी एसडीएम खरीदी केन्द्रों का निरीक्षण करके गेहूं के सुरक्षित भण्डारण की व्यवस्था सुनिश्चित कराएं।

एफसीआई और एसडीएम पेटलावद ने खरीदी केन्द्रों का किया निरीक्षण

निरीक्षण में गेहूं के सैंपल लिए गए

झाबुआ। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पेटलावद अनिल कुमार राठौर ने भारतीय खाद्य निगम की टीम के साथ गेहूं खरीदी केन्द्रों रायपुरिया, सारंगी, मंडी स्तरीय खरीदी केंद्र पेटलावद, पाटीदार वेयरहाउस पेटलावद का औचक निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण में गेहूं के सैंपल एफसीआई की टीम द्वारा लिए गए। साथ ही टीम ने किसानों को समझाया कि किसान अपने गेहूं बिक्री करने से पहले पंखा एवं मैकेनाइज्ड छन्ना अवश्य उपयोग करे जिससे शासन की मंशानुरूप ए मोड में गुणवत्ता मापदंड अनुसार एफसीआई गोदाम में गेहूं जमा कर सकें।

टीम में भारतीय खाद्य निगम के तकनीकी सहायक प्रहलाद देवड़ा, वीरेंद्र सिंह, नागरिक आपूर्ति निगम से जिला प्रबंधक विवेक रंगारी, मध्य प्रदेश वेयरहाउस लॉजिस्टिक्स कॉरपोरेशन से पी.एस. हटीला, निलेश पाटीदार, खाद्य आपूर्ति विभाग से कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी सुरेश तोमर उपस्थित रहे।

स्टीविया की पत्तियां ब्लड शुगर का वैकल्पिक स्त्रोत

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलगुरू डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की प्रेरणा से एवं पादप कार्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आर.के. समैया के मार्गदर्शन में औषधीय उद्यान में स्टीविया की खेती चर्चा का विषय बनी हुई है। दरअसल औषधीय उद्यान प्रभारी डॉ. ज्ञानेन्द्र तिवारी की देखरेख में स्टीविया की खेती की जा रही है। डॉ. ज्ञानेन्द्र तिवारी ने जानकारी देते हुये बताया कि स्टीविया की खेती किसानों की आय का स्त्रोत ही नहीं, बल्कि डायबिटीज के मरीजों के लिये शक्कर का वैकल्पिक स्त्रोत होने के साथ-साथ ब्लड शुगर को नियंत्रित करता है। भारत में आजकल हर तीसरा-चौथा व्यक्ति डायबिटीज, मोटापा जैसी घातक बीमारियों से ग्रसित होता जा रहा है। इसलिये ऐसे मरीजों के लिये शुगर का वैकल्पिक स्त्रोत एवं बीमारी से बचाव की आवश्यकता है। स्टीविया की पत्तियां शक्कर की तुलना में 20 से 25 गुना अधिक मीठी होने के कारण इसका व्यवसायिक उपयोग पूरे विश्व में बहुत तेजी से हो रहा है।

विदित हो कि जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा स्टीविया की उन्नत खेती प्रसंस्करण, मूल्य-संवर्धन एवं विपणन के क्षेत्र में शोध कार्य किये जा रहे हैं, साथ ही इसके उत्पादों का पेटेंट प्राप्त करने की दिशा में

कार्य प्रगति पर है। दरअसल इसकी खेती के लिये मध्यप्रदेश के वो सभी क्षेत्र उपयुक्त हैं, जहां जल भराव की समस्या नहीं होंने के साथ-साथ सिंचाई की समुचित व्यवस्था है। स्टीविया की खेती से परंपरागत कृषि फसलों की तुलना में तीन गुना तक अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। स्टीविया की फसल एक बार लगाने के बाद 5 साल तक पत्तियों का उत्पादन किया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष 3 बार पत्तियों की कटिंग की जा सकती है। स्टीविया के पत्तो से ही औषधी बनाई जाती है। हर वर्ष 30 से 35 क्विंटल सूखी पत्तियों का उत्पादन प्रति हेक्टेयर होने की संभावना बताई गई है। जिससे वर्ष भर में प्रति हेक्टेयर 150 से 175 क्विंटल सूखी पत्तियों का उत्पादन होता है। लिहाजा स्टीविया की पत्तियां सौ रूपये किलोग्राम के मूल्य से विक्रय की जाती हैं। विश्वविद्यालय स्थित औषधीय उद्यान में वर्तमान में 11 सौ प्रकार के अलग-अलग किस्मों के पौधे संरक्षित हैं। जिनसे कई गंभीर बीमारियों के उपचार हेतु औषधीयां तैयार की जाती हैं एवं शोध कार्य किये जा रहे हैं।

स्टीविया से फायदे-

- स्टीविया के सेवन से मोटापा कम किया जा सकता है।
- स्टीविया से डायबिटीज को नियंत्रित किया जा सकता है।
- हार्ट के मरीजों के लिये स्टीविया फायदेमंद होती है।
- जोड़ों के दर्द में स्टीविया आराम दिलाती है।
- स्टीविया की खेती से कम लागत में कई गुना अधिक मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है।
- स्टीविया की खेती कभी भी की जा सकती है।

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

कृषक दूत

पृष्ठ क्रमांक-16
भोपाल मंगलवार 23 से 29 अप्रैल 2024

इस साल जमकर बरसेंगे मानसूनी बादल

बढ़ेगा खरीफ फसलों का उत्पादन

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने इस साल मानसून के सामान्य से बेहतर रहने की भविष्यवाणी की है। इससे महंगाई के खिलाफ जंग में सरकार को कुछ राहत मिल सकती है। विभाग ने कहा है कि 2024 में मानसून करीब 106 फीसदी लंबी अवधि के औसत (एलपीए) के साथ सामान्य से बेहतर रहने का अनुमान है। मॉनसून के दौरान देश भर में अच्छी बारिश होने से खरीफ कृषि उत्पादन बढ़ेगा और अगली रबी फसल के लिए खेतों में आवश्क नमी बनी रहेगी।

मौसम विभाग की इस भविष्यवाणी से इस साल मानसून के बारे में अधिकतर मौसम विशेषज्ञों के बीच आम सहमति दिखती है। मौसम पूर्वानुमान जारी करने वाली निजी एजेंसी स्काईमेट ने भी कहा था कि इस साल देश भर में दक्षिण-पश्चिम मानसून 102 फीसदी एलपीए के साथ 'सामान्य' रह सकता है।

जून से सितंबर की अवधि की बारिश के लिए एलपीए 87 सेंटीमीटर है और इसके लिए 106 फीसदी के पूर्वानुमान का मतलब साफ है कि मानसून सामान्य से बेहतर रहेगा। आमतौर पर 96 से 104 फीसदी एलपीए के साथ बारिश को सामान्य माना जाता है। यह पूर्वानुमान 5 फीसदी घटबढ़ की मॉडल त्रुटि के साथ जारी किया गया है। विभाग ने कहा है कि जून में मानसून का मौसम शुरू होने तक अल नीनो के तटस्थ रहने की उम्मीद है। उसके बाद धीरे-धीरे वह ला नीना की ओर रुख करेगा जो एक सकारात्मक हिंद महासागर डाइपोल (आईओडी) है। मौसम विभाग ने कहा है कि इन सब कारकों से इस साल मॉनसून अच्छा रहने का अनुमान है। साल 2023 में अल नीनो के प्रभाव के कारण दक्षिण-पश्चिम मानसून सामान्य से कमजोर रहा था। उससे पहले चार वर्षों के दौरान मानसून सामान्य रहा था।

मौसम विभाग ने कहा कि इस साल देश के 75 से 80 फीसदी भूभाग में मानसून के सामान्य रहने की उम्मीद है। जबकि पश्चिमोत्तर के कुछ चरम इलाकों (जम्मू-कश्मीर एवं उत्तराखंड के पहाड़ी इलाके) और पूर्व एवं पूर्वोत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों (असम, ओडिशा एवं पश्चिम बंगाल के गंगा के तटवर्ती इलाके) में मॉनसूनी बारिश सामान्य से कम हो सकती है। मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्र ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा, 'ऐसा आम तौर पर सामान्य से बेहतर मानसून वाले वर्षों में दिखता है जब पूर्वी एवं पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में बारिश सामान्य से कम होती है।' मौसम विभाग ने कहा कि 31 फीसदी संभावना है कि इस साल दक्षिण-पश्चिम मानसून की बारिश सामान्य से बेहतर रहेगी, 30 फीसदी संभावना है कि बारिश अत्यधिक होगी, 29 फीसदी संभावना है कि बारिश सामान्य रहेगी और महज 2 फीसदी संभावना है कि बारिश सामान्य से कम रहेगी। श्री महापात्र ने कहा 'संक्षेप कहा जाए तो 2024 में मानसून के सामान्य से बेहतर अथवा अत्यधिक होने की 60 फीसदी से अधिक संभावना है और इसके सामान्य से कम अथवा कमजोर रहने संभावना काफी कम है।'

2023-24 सीजन में नहीं कर सकेंगे चीनी निर्यात

नई दिल्ली। सरकार ने अक्टूबर में समाप्त होने वाले मौजूदा 2023-24 सीजन में चीनी निर्यात की अनुमति देने की संभावना से इनकार कर दिया। वर्तमान में चीनी के निर्यात पर अनिश्चित समय तक के लिए प्रतिबंध लगा हुआ है। भारतीय चीनी मिल संघ (इस्मा) ने सरकार से 2023-24 सीजन में 10 लाख टन चीनी के निर्यात की अनुमति देने का अनुरोध किया है। उसे सीजन के अंत तक पर्याप्त भंडार होने की उम्मीद है।

खाद्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा '' फिलहाल, सरकार चीनी निर्यात पर विचार नहीं कर रही है, हालांकि उद्योग ने इसका अनुरोध किया है।' देश का चीनी उत्पादन चालू 2023-24 सीजन में मार्च तक तीन करोड़ टन को पार कर गया था। इस्मा ने 2023-24 सीजन के लिए शुद्ध चीनी उत्पादन अनुमान को संशोधित कर 3.2 करोड़ टन कर दिया है। सरकार ने चीनी उत्पादन 3.15-3.20 करोड़ टन होने का अनुमान लगाया है। इस बीच सरकार चीनी मिलों को इस साल इथेनॉल उत्पादन के लिए बी-हैवी श्रेणी के शीरा के अतिरिक्त भंडारण का इस्तेमाल करने की अनुमति देने पर विचार कर रही है।

किसानों एवं कृषि क्षेत्र से सम्बद्ध व्यक्तियों के लिए कृषक दूत की अनुपम सौगात...

कृषक दूत

द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकों पर भारी छूट

सभी पुस्तकों पर 50% छूट

योजना का लाभ स्टाक रहने तक लागू *

• मंगाई जाने वाली पुस्तकों का भुगतान अग्रिम रूप से अनिवार्य। डाक/कोरियर खर्च अतिरिक्त

पुस्तक का नाम	पुरानी कीमत	छूट के बाद कीमत	पुस्तक का नाम	पुरानी कीमत	छूट के बाद कीमत	पुस्तक का नाम	पुरानी कीमत	छूट के बाद कीमत	पुस्तक का नाम	पुरानी कीमत	छूट के बाद कीमत
रबी फसलों की कृषि कार्यमाला	40/-	20/-	धान की उन्नत खेती	100/-	50/-	फलों की खेती	50/-	25/-	बकरी पालन	100/-	50/-
गेहूं की उन्नत खेती	30/-	15/-	कपास की खेती	50/-	25/-	फूलों की खेती	30/-	15/-	ट्रैक्टर का रखरखाव	50/-	25/-
दलहनी फसलों की खेती	30/-	15/-	फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन	250/-	125/-	गुलाब की खेती	30/-	15/-	कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव	50/-	25/-
गन्ने की खेती	26/-	13/-	जैविक खेती	50/-	25/-	नर्सरी के वैज्ञानिक तरीके	30/-	15/-	फलों का औषधीय उपयोग	100/-	50/-
खरीफ फसलों की खेती	50/-	25/-	वर्मी कम्पोस्ट	30/-	15/-	मधुमक्खी पालन	150/-	75/-	तिलहनी फसलों की खेती	50/-	25/-
सोयाबीन की उन्नत खेती	20/-	10/-	सब्जी उत्पादन की उन्नत तकनीक	150/-	75/-	पशु पालन	100/-	50/-	निर्यात की खेती	30/-	15/-

पुस्तक मंगाने हेतु संपर्क करें :-

कृषक दूत

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)

फोन (0755) 4233824, मोबा. 9425013875, 9300754675, 9827352535

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube